मैं गीत सुनाता जाऊँगा

गीतकार

वल्लभेश दिवाकर

प्रकाशक

प्रगति पथ प्रकाशन

१४, शिवठाकुर गली

कलकत्ता—७



सुर एवं शब्द साधना के

प्रतीक श्रद्धेय

आचार्य बृहस्पति

को

समर्पित

भूमिका

लटखडाते है कदम तो क्या हुआ गम नही इसका कि मञ्जिल दूर है
गम मेरे दिल मे है तो इस बातका आदमी क्यों आदमी से दूर है।
जो कवि इस भाव भूमि मे पला हो व सवदा—

नवीन विश्व के लिये नवीन रक्त दान दे
म आदमी बना रहा मैं आदमी बना रहा।

यह गीत गाता हो उस गायक का नाम है 'वल्लभेश दिवाकर'। भाई वल्लभेश 'दिवाकर ने' निर्द्वन्द, द्वन्द के बीच समन्वय दीप जलाने की कामना से प्रेरित होकर *"म गीत सुनाता जाऊगा"* के गीतो की रचना की है। ऐसा आपके प्रथम गीत से ज्ञात होता है।

हर मन की आशा नगरी मे
विश्वास भरी सुर लहरी मे
किरणो से प्रेरित होता मैं मृदु बीन बजाता जाऊ गा
निर्द्वन्द, द्वन्द के बीच समन्वय दीप जलाता जाऊगा
म गीत सुनाता जाऊ गा।

इन पक्तियों का स्रष्टा ही अगर कहे—मै गीताञ्जलि का मधुर छन्द तो उपयुक्त लगता है। अन्यथा आज तक तो गुरुदेव रवीन्द्र की गीताञ्जलि के छन्दों मे सबने ओजस्विता के ही दर्शन किये हैं।

आजस्विता मे मधुरता की अनुभूति उसी स्थिति मे उत्पन्न हो सकती है जब व्यक्ति ओजस्विता को आत्मसात् करले, कथनी और करणी के भेद को भग करदे। स्वय को अन्तहीन अनुभव करने लगे। जीवन को अनुराग व आस्था से ओत प्रोत रखे।

सग्रह की सभी रचनाये जिस उद्देश्य विशेष से प्रभावित होकर

प्रस्फुटित हुई है उस उद्देश्य से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने के लिये प्रथम गीत, मैं, और मैं अन्तहीन ये तीन रचनायें उपयुक्त है, यह मेरी मान्यता है।

वल्लभेशजी को रचनाये आदर्शवाद, यथार्थवाद के बीच के पथ से गुजरती हुई प्रगतिवाद के मैदान मे खडी होकर प्रयोगवाद को सम्बोधित करती है।

रचना शिल्प प्राचीन होते हुए भी रोचक है। भाषा उर्दू सस्कृत मिश्रित उद्‌बोधक है। राष्ट्रीय एव मानवीय तत्वो से अभिभूत होकर 'वल्लभेशजी ने ये गीत विश्वव्यापी अभ्युदय की पृष्ठभूमि पर खडे होकर गाये है अत निसन्देह उद्देश्यपूर्ण प्रयास के द्योतक है।

त्रिवेदी हाउस —ब्रजेन्द्र गौड

१६ वा रास्ता खार, बम्बई ५२ २४ ७ ६३



कुछ अपनी भी

जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये।
इसलिये बस जी रहा हूँ, गीत गाने के लिये॥

मेरे अन्तर मे उद्वेलित उपरोक्त भावना ने 'नई वाणी' को जन्म दिया। अनुकूल मौसम मिलने के कारण उसे फूलने फलने का मौका मिला। प्रथम प्रयास की सफलता ने इस नये सग्रह को आपके समक्ष रखने की हिम्मत दी। यह कैसा है इसका निर्णय म क्यो करूँ?

—वल्लभेश दिवाकर

अनुक्रमणिका

मैं गीत सुनाता जाऊंगा

हर मन की आशा - नगरी में
विश्वासभरी सुर लहरी में
किरणों में प्रेरित होता मैं, मृदु बीन बजाता जाऊंगा
मैं गीत सुनाता जाऊंगा

मैं गंगा, यमुना, सतलुज औ' रावी की आशा का गायक
मैं अमर अजन्ता, एलोरा, औ' ताजमहल का परिचायक
मैं गीतांजलि का मधुर छन्द, मैं राजघाट का अभिचायक
निर्द्वन्द द्वन्द के बीच समन्वय - दीप जलाता जाऊंगा
मैं गीत सुनाता जाऊंगा

समय की धरती से आगे, आगे, आगे त्रिभुवन आगे
जो गीत मैं गाये जाता हूं, ये गीत वहीं पर हैं जागे
जब - जब जन्मे ये गीत अटल निश्चय के थे बाजे बाजे
इसलिये मैं अपने गीतों की लय और बढ़ाता जाऊंगा
मैं गीत सुनाता जाऊंगा

गाता रहूंगा

जब गाने चला हूं तो गाता रहूंगा
जो सूझेगा मुझको सुनाता रहूंगा
अपनी और से तो जमाने को सारे
आवाज दे-दे बुलाता रहूंगा

जो सोये हैं उनको जगाता रहूंगा
जो रूठे है उनको मनाता रहूंगा
दिये प्यार के नित जलाता रहूंगा
तार मास, के झन झनाता रहूंगा

उमङ्गों की गंगा बहानी है मुझको
प्रपञ्चों की गठरी डुबानी है मुझको
मेरी चाह है, मै बनूं अग्रगामी
अत चोट पहली खानी है मुझको

प्रहारों को प्रतिभा दिखानी है मुझको
प्रहारों की गर्दन झुकानी है मुझको
जगानी है मुझको दमकती जवानी
रवानी की शोभा बढानी है मुझको

मेरे साथ चलती बहारो की मस्ती
मेरे साथ चलती सितारो की बस्ती
मुझसे मागती है किश्तिया—किनारा
सुहानी नही है मुझे बात सस्ती

छुपाये न छुपता, है वह प्यार मेरा
मिटाये न मिटता, वह आधार मेरा
पराया मैं समझू, किसको बताओ!
खुद को सब मे देखू, यह अधिकार मेरा

मैं पूछे बिना ही बताता रहूगा
कोई आये न आये, म बुलाता रहूगा
गले से सभी को लगाता रहूगा
मन्त्र मित्रता के सुनाता रहूगा

समर्पण की स्मृतिया जगानी है मुझको
विसर्जन की कृतिया मिटानी है मुझको
प्रदर्शन की मदिरा कौन पी सकेगा
स्वदर्शन की रुचिया बढानी है मुझको

सृजन सभ्य हो, सभ्य हो हर इशारे
चमकने लगे आदमी बन सितारे
सहारे की चाहत किसी को भी क्यू हो
तरगो को चूमे, चलके खुद किनारे

मैं हक सब को अपना दिलाता रहूगा
व्यथाये पुरानी भुलाता रहूगा
कहेगा मुझे कौन, यह कर तू वह कर
स्वय फर्ज अपना निभाता रहूंगा

जब गाने चला हूँ तो गाता रहूँगा
गाता रहूँगा गाना रहूँगा

प्यार के दिये जलाता हूं मैं

कदम कदम पर पल-पल छिन छिन, प्यार के दिये जलाता हूं मैं
यह मत पूछ जमाने मुझसे, क्या खोता क्या, पाता हूं म

चमक रहा हूं बन ध्रुव - तारा
म मानव जीवन के पथ पर
यही लिये विश्वास बैठ कर
चलता म सावन के रथ पर

कोई जलता जले, मुझे क्या, कोई छलता छले, मुझे क्या ?
मने तो सीखा है गाना, अपनी रीत निभाता हूं मं
प्यार के दिये जलाता हूं मं

हर आगन को मै वृन्दावन—
समझ रहा था, समझ रहा हू
हर आनन को मै शिव आनन
समझ रहा था, समझ रहा हू

कोई जाने या ना जाने, कोई माने या ना माने
रूठ रूठ कर जो जीते है, उनको सदा मनाता हू मै
प्यार के दिये जलाता हू मै

मंजिल मेरी मुझे मनाती
गीत नये नित गा के सुनाती
जो मै चाहू वह दे जाती
मै दीपक तो है वह बाती

हर वियोग को मिलन दे रहा, हर प्रयोग का चरण दे रहा
देकर भजन, भजन को नव स्वर सोये प्राण जगाता हूं मै
प्यार के दिये जलाता हूं मै

दो क्षण मन बहला दे, मै वह गान नही हू

प्रिय मुझ को अपने मन की आखो से देखो
दो क्षण मन बहला दे, मं वह गान नही हू !

मैन निझर से मन-बीन बजाना सीखा
मने किरणा से मन-दीप जलाना सीखा
गिरि उर से मैने फौलादी दिल पाया है
धरती के अन्तर से दर्द भुलाना सीखा
बाह्य म मेरा सुन्दर हरगिज हो सकता है
देखो, म कल्पित कोई भगवान नही हू !
दो क्षण मन बहला दे, म वह गान नही हू !

डग छोटे है और है लम्बी मजिल मेरी
कदम कदम पर मृत्यु परीक्षण शख बजाता
झुलस - झुलस कर, गिर गिर कर, फिर उठता हू म
फिर भी प्रतिक्षण महापरीक्षण प्राण जलाता
क्षणिक सुखो के आगे अपना शीश झुका दू—
मैं इतना कलुषित, इतना नादान नही हू !
दो क्षण मन बहला दे, म वह गान नही हू !

मेरे हलके वसन देख मन घबराओ तुम
मेरा उजड़ा सदन देख मत घबराओ तुम
प्यार है मुझ से तो मेरी आशा में देखो
पहचानो मुझको, दुख में मन घबराओ तुम
मेरा धन, गीतों का धन है, सोचो-समझो
मैं चांदी सोने वाला धनवान नहीं हूं।
दो क्षण मन बहला दे, मैं वह गान नहीं हूं।

जिसको कहूं, हृदय की उन्मोचित सी बातें
लिखता कहूं, तड़पती है मेरी सौगातें
जिसको कहूं, व्यथित मेरी चाहों का चन्दा
हार रहा है घातें घातें कारी रातें
छल के झाड़े घेर रहे हैं कदम कदम पर
घबरा जाये उनसे, मैं वह प्राण नहीं हूं!
दो क्षण मन बहला दे, मैं वह गान नहीं हूं।

मुझको मरघट में जल कर जिन्दा रहना है
मुझको जब सब दुनिया है, जिन्दा रहना है
मुझको आता है, जीवन आसान बनाना
मुझको है वीरानों को उद्यान बनाना
मेरी नजरों में मन्दिर-मस्जिद प्यारा है
मैं चेतन को कुचले वह पाषाण नहीं हूं।
दो क्षण मन बहला दे, मैं वह गान नहीं हूं।

हर घर मेरे मन का मन्दिर

हर घर मेरे मन का मन्दिर, हर जन-जन भगवान है
हर मन की मुस्कान ही मेरे जीने का सामान है

चाह है मेरी, हर मानव की अभिलाषा पूरी करदूं
परिभाषा कुछ बदल, मिलन की दूर सकल दूरी करदूं
मन मे मेरे, मेरे साथी, एक यही अरमान है
हर घर मेरे मन का मन्दिर, हर जन-जन भगवान है
हर मन की मुस्कान ही मेरे जीने का सामान है

चाह है मेरी जग मे, ना कोई मेरा इतिहास बने
चाह है मेरी धरती पर हर ऋतु मे मृदु मधुमास मने
हर साथी के उन्नतपन मे ही मेरा उत्थान है
हर घर मेरे मन का मन्दिर, हर जन-जन भगवान है
हर मन की मुस्कान ही मेरे जीने का सामान है

राह है मेरी वह जिसके, आंचल मे छुपा सवेरा है
जहाँ उदय अंगड़ाई लेता, मेरा वही बसेरा है
जिसमे हर मन की हो धड़कन, प्रिय मेरा वह गान है
हर घर मेरे मन का मन्दिर, हर जन जन भगवान है
हर मन की मुस्कान ही मेरे जीने का सामान है

प्यार मुझसे है तो जलना सीखले

प्यार मुझसे है तो जलना सीख ले !
प्यार मुझसे है तो मरना सीख ले।
मै तुम्हे दूगा हमेशा मुश्किले
तू उन्हे आसान करना सीख ले।

फूल मैं अपने निकट रखता नही
ताज मेरे शीश पर है शूल का
छत्र नभ है औ' दिशायें वस्त्र है
बिस्तरा रखता हमेशा धूल का
रोटियां शायद मिले या ना मिले
ठोकरो से पेट भरना सीख ले।
प्यार मुझसे है तो जलना सीख ले।

कण्ठ मे मेरे सुरीला स्वर नही
लोचनो मे एक रूखा प्यार है
दिल मे शायद ठौर तुम भी पा सको
क्योकि इस पर विश्व का अधिकार है
चाह है अधिकार की यदि कुछ तुम्हे
मुझसे तू व्यवहार करना सीख ले।
प्यार मुझसे है तो जलना सीख ले।

भेंट मे दूगा तुम्हे कुछ दर्द ही
धन यही तो एक मेरे पास है।
दर्द जिसमे है नही वह नर नही
एक चलती और फिरती लाश है
दर्द जिसमे है नही वह प्यार क्या ?
दर्द पीकर मुस्कराना सीख ले।
प्यार मुझसे है तो जलना सीख ले।

दर्द मांगते चलो

दर्द मागते चलो । दद मागते चलो । दर्द ही महान है ।
दर्द की ही कील पर टिका हुआ जहाँन है ।

दर्द मे छुपे हुए अनन्त ज्योति-पुञ्ज है
दर्द मे रचे हुए सभी महल निकुञ्ज है

दद अन्धकार है, दद ही प्रकाश है
दद रात का तिमिर, प्रभात का विकास है

दद-हीन जिन्दगी का नाम जिन्दगी नही
दर्द-हीन बन्दगी का नाम बन्दगी नही

दद ने जिसे छुआ, वही महान हो गया
जहा तिमिर घिरा, वही सुखद विहान हो गया

जो दर्द को पियूष मान मुस्करा के पी गये
वे मृत्यु से डरे नही, मसान जा के जी गये

न उनका तन कफन के तन्तुओ मे बन्द हो सका
जली चिता, उठा धुआ, न उनका अन्त हो सका

अगर न हो यकीन, पूछलो जरा कबीर से
गगन से पूछ लो, या पूछ लो सरल समीर से

सुनो सितार-तार आज किसके गीत गा रहे ?
वियोगिनी थी कौन वह न जिसको हम भुला रहे ?

क्यो पूजते है आज हम शहीद के मजार को ?
दुलारते है आज हम क्या झोपडो के द्वार को ?

डरो न बाह्य देखकर, हसो न रूप देखकर
सदा सभी के अन्तराल को सवारते चलो !
दद मागते चलो, दद मागते चलो !

तड़प रे मन

रे तड़प रे ! मन तड़प ! केवल समर्पण के लिये
कह दिया किसने, तुझे तू है प्रदर्शन के लिये

सास को क्यों सोंपता चलता है तू फिर याचना
आस को नश्वर खिलौने, प्यास को कटु वासना
कामना जन्मी नहीं है क्षुद्र दर्शन के लिये
रे तड़प रे ! मन तड़प ! केवल समर्पण के लिये
कह दिया किसने, तुझे तू है प्रदर्शन के लिये

चल रहा, करता इकट्ठे क्यूं तू कलुषित आवरण
कर रहे क्रन्दन तुझे ही देव तेरे आचरण
मत उठा घन संशया के क्षुब्ध गर्जन के लिये
रे तड़प रे ! मन तड़प ! केवल समर्पण के लिये
कह दिया किसने, तुझे तू है प्रदर्शन के लिये

जानता हूं प्राप्त कर लेगा प्रदर्शन से तू मान
किन्तु खो देगा समुज्ज्वल भावनाओं का विहान
मिन्नतें मागेगा जग तेरे विसर्जन के लिये
रे तड़प रे ! मन तड़प ! केवल समर्पण के लिये
कह दिया किसने, तुझे तू है प्रदर्शन के लिये

लो संकल्प।

लो संकल्प। आज से हो लो।
सह चिन्तन का, सह गुंजन का।
सह वन्दन सह अभिनन्दन का

एकाकीपन पुन किसी आक्रामक दल को उकसायेगा
सचित सकल भय का हिमगिरि गल जायेगा, ढल जायेगा
स्वप्न न होगा पूर्ण कभी फिर, चिर-चिन्तित जन मन रंजन का
लो संकल्प। आज से हो लो। सह चिन्तन का, सह-गुञ्जन का
सह-वन्दन, सह-अभिनन्दन का

आक्षेपो की ज्वाल रक्त को कहा उष्णता दे पायेगी
आत्म निरीक्षण से पौरुष की चमक दमक कुछ बढ पायेगी
सत को ढूढो, सत को चाहो, श्रम स्वीकारो मति मन्थन का
लो संकल्प। आज से हो लो। सह चिन्तन का, सह-गुञ्जन का
सह-वन्दन, सह-अभिनन्दन का

किरणो की पगडण्डी ढूढो, यदि सच्चे पूरब वाले हो
आलोकित दलबन्दी ढूढो, यदि सच्ची नीयत वाले हो
ये क्या भूले, ले बैठे हो, ठेका तुम भव भय भंजन का
लो संकल्प। आज से हो लो। सह चिन्तन का, सह-गुञ्जन का
सह वन्दन, सह-अभिनन्दन का

कब तक कोई दूर रहेगा

कब तक कोई दूर रहेगा, अगर लगन की रेख प्रबल है

आज नही तो कल उसको—
नूपुर झनकाते आना होगा
स्वय तुम्हारी शुष्क वाटिका—
को, आकर सरसाना होगा
तथ्य अधूरा नही चिरतन ध्रुव-सा ज्योतिर्मान अटल है
कब तक कोई दूर रहेगा, अगर लगन की रेख प्रबल है

माना आज दूर वह तुम से
और कही इठलाता होगा
मगर न सोचो यह कि तुम्हारा
ध्यान न उसको आता होगा
साधक के शब्दों की ताकत से अब तक तुम अनजाने हो
इसीलिये हर स्वप्न विकल है, इसीलिये हर यत्न विफल है
कब तक कोई दूर रहेगा, अगर लगन की रेख प्रबल है

साथी चल रे।

चल रे। साथी चल रे।
चल रे। साथी चल रे।

पूर्व दिशा में खड़ा उदय का साथी तुझे बुलाता
किरणों के रथ पर चढ तव पथ पर अमृत बरसाता
चरण बढा मन नयन खोलकर, लगन लिये उज्ज्वल रे।
चल रे। साथी चल रे!

अम्हाये फूलों की छाँया से क्या प्रीत लगाना
पल ना देकर हरे प्राण उनसे क्या नेह लगाना
चरण पतन का छोड़ चयनकर उन्नति पथ उज्ज्वल रे।
चल रे। साथी चल रे।

जीवन पथ पर

मन का ब्याह बुद्धि से रचकर
जीवन पथ पर चरण धरो रे।

निष्ठा के वट को सींचो रे, लिये साधना की जलधारा
छाव मिलेगी शीतल, फल भी तुम्हें मिलेगा प्यारा प्यारा
रीती झोली विश्वासो की गहरे पानी पैठ भरो रे।
जीवन पथ पर चरण धरो रे।

आखों की कालिख धो डालो, ज्ञान का अजन लगा लगा कर
प्राणों की पीड़ा धो डालो, प्रीति की गगा बहा-बहाकर
चिन्ता-गुहा भेद कर उर्मिल स्मिति-सागर के तीर तरो रे।
जीवन पथ पर चरण धरो रे।

जागो ! जीवन जाता है

रात दिवस घटि-पल के परो पर बैठा
जागो ! जीवन जाता है

जिद्दी मन को साथी मेरे, समझा लो
बहके मन को साथी मेरे, समझा लो
मैं जो गाता गीत नियन्त्रण के प्रतिपल
आओ, मेरे साथ जरा तुम भी गालो

सपनों का आशा-कुसुम इस दुनिया में
कहाँ किसी को बाओ तो मिल पाता है ?
जागो ! जीवन जाता है

व्यर्थ गया हर-पल मय का उन्मादक है
भोले भाले अन्तर का उन्मादक है
साधक बन हर पल को व्यर्थ न जाने दो
अर्थ को अपने मन अनघ पथ पाने दो

सीपी के उर में मोती मुस्काते हैं
पल में पत्थर में हीरक दमक जाता है
जागो ! जीवन जाता है

दीप जलो !

जग मग जग मग
जग मग जग मग
आलोकित करने
मम दृग मग, ओ मेरे मानस मन्दिर के दीप जलो !
दीप जलो !

आधी रात है
झंझावात है
घिरा घटाओं—
से प्रभात है
व्याकुल धरती
व्याकुल अम्बर
व्याकुल आशा
व्याकुल अन्तर
विकट शूल बिखरे हैं पग पग, पग-पग के प्रतिरक्षक पावन दीप जलो !
दीप जलो !

प्राण प्राण मे
गान गान मे
ध्यान - ध्यान मे
आन बान मे
पावन इच्छा
पावन स्वर हो
पावन निष्ठा
पावन स्तर हो
गाये इन्हीं सुरा मे रग रग, औ' रग रग की आशा के घर-दीप जलो !
दीप जलो !

मै भी गाऊं, तू भी गा रे।

मै भी गाऊ, तू भी गा रे।

युग भेद जर्जर स्मृतियो के
तार झनझना कर श्रुतियो के
दीप जला कर सत कृतियो के
पावन स्वर भर आज कण्ठ मे विश्वासो के मन्त्र सुना रे।
मै भी गाऊ, तू भी गा रे।

गलियो मे तू छोड भटकना
चौराहे पर सीख पहुचना
पुलक पुलक कर सीख सुलझना
छोड सिसकना छुप छुप मन मे, मुक्त मन्त्रणा मन्त्र सुना रे।
मै भी गाऊ, तू भी गा रे।

देख जिन्दगी कितनी छोटी
मौत की नीयत कितनी खोटी
इधर है इच्छा, उधर है रोटी
सम्मुख है कर्तव्य तुम्हारा, पहले इसकी प्यास बुझा रे।
मैं भी गाऊ, तू भी गा रे।

जो पूजा का बन कर चन्दन
जो जीवन का बन बन - नन्दन
जो सासो का बन मृदु स्पन्दन
वन्दन करना काम तुम्हारा, मत क्रन्दन के साज बजा रे !
मैं भी गाऊ, तू भी गा रे !

तुझे पडी छुपने की आदत
तुझे पडी रुकने की आदत
यह आदत कब देती राहत
चाहत रख उठने की प्रतिपल, प्रतिक्षण श्रम की अलख जगा रे !
मैं भी गाऊ, तू भी गारे !

गीत गाने के लिये

जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये
इसलिये बस जी रहा हू, गीत गाने के लिये

कौन है वे, जिनका दुनिया को भुलाना काम है
मैं तो जिन्दा हू, इसे ऊचा उठाने के लिये
जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये

अपनी किस्मत का सितारा ले के अपने हाथ मे
म चला दुनिया की किस्मत जगमगाने के लिये
जिन्दगी पाई है मने गीन गाने के लिये

प्रीत की जिन मे कमी वे मागते फिरते हैं प्रीत
प्रीत उनकी है, जो जीते गीत गाने के लिये
जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये

रुदन को देनी जनम इन्सान की कमजोरिया
वेखबर हैं इससे वे, हैं जन्म खाने के लिये
जिन्दगी पाई है मैंने गीन गाने के लिये

कटुता के पथ पर

कटुता के पथ पर जीवन के रथ को हाँक रहा इन्सान
सम्भव है कैसे पा जाना उसका इक पल भी मुस्कान

काच का पुतला ज्वाला सदन मे
रख कर बचाने की चाह
शोलों की माला रख कर गले पर
चाहे हो न कुछ भी दाह
सम्भव है कैसे स्थिरता का रहना पलता जहाँ हो तूफान
कटुता के पथ पर जीवन के रथ को हाँक रहा इन्सान

तिमरालय मे देखी है किसने
जगमग किरण की रेख
मदिरालय मे देखा है किसने
शुचि जीवन का विवेक
कमे न होगा निशि औ' दिवस मे वर्णो का व्यवधान
कटुता के पथ पर जीवन के रथ को हाँक रहा इन्सान

साथी, यह कैसी ऋतु आई

साथी, यह कैसी ऋतु आई।

भोर की वेला, आँचल मैला पहन खडी हुई है
व्यथित अरुणिमा तिमिर पदो मे देखो पडी हुई है
उदय लुप्त है, अस्त गर्जना देती सतत सुनाई
यह कैसी ऋतु आई।

प्राण, वायु दूषित है, दूषित है विवेक का उपवन
झुलस रहा है मदिरा से मानव का मधुमय मधुवन
मध्य मृत्यु औ' जीवन के समृति विलखे थर्राई
यह कैसी ऋतु आई।

धुआँ उठ रहा, अग्नि शिखा अब उठने ही वाली है
सासो की गति भी शायद अब तक रुकने वाली है
हाहाकार उठ रहा चुप चुप सिसक रही शहनाई
यह कैसी ऋतु आई।

आदमी क्यो आदमी से दूर है ।

लड़खड़ाते हैं कदम तो क्या हुआ, गम नही इसका कि मंजिल दूर है
गम मेरे दिल मे है तो इस बात का, आदमी क्यो आदमी से दूर है ।

गम नही है, खेत वीरा हो रहे
गम नही है, आशिया वीरान है
गम यही दिल को सताये जा रहा
खा रहा इन्सान को इन्सान है
सभ्यता आँसू बहाती फिर रही, स्नेह की हर आस चकनाचूर है ।
आदमी क्यो आदमी से दूर है ।

क्यो डरू मै धधकते समसान से ?
याचना मै क्या करू भगवान से ?
जिन्दगी औ' मौत का मै फैसला
मागता हू एक कुल इन्सान से ।
आज चारो ओर ज्वाला जल रही, शेप केवल कफन का दस्तूर है ।
आदमी क्यो आदमी से दूर है ।

स्वर्ण के अम्बार लेकर क्या करू ?
क्या करू मै मोतियो के हार का ?
कब महल औ' मोतियो से चल सका
काम इस दुख से भरे ससार का ?
यदि असम्भव आदमी का है मिलन, फिर मुझे तो मृत्यु ही मजूर है ।
आदमी क्यो आदमी से दूर है ।

अलग-अलग न चल ओ आदमी, अलग अलग
अलग अलग चलन से फटे वीज फूट के, फले वीज फूट के !
गिर पडी है जिन्दगानी आज टूट के ।

खबर है क्या तुझे किधर ये बढ़ रहे चरण ?
खबर है क्या तुझे किधर ये उग रही अगन ?
जलन ही बस जलन से जमाना तडप रहा
उगल रही जवानी जहर आज रूठ के ।
गिरपडी है जिन्दगानी आज टूट के ।
अलग अलग न चल ओ आदमी, अलग अलग

न कोई कर रहा है कुछ किसी के वास्ते
भटक रहे है आज सभी भूल रास्ते
उजडते सभी रास्ता को देख - देख कर
रो रही है जिन्दगानी फूट - फूट के ।
गिरपडी है जिन्दगानी आज टूट के ।
अलग अलग न चल , ओ आदमी, अलग अलग

सुहाग पर पडा कफन, कफन मे लगी आग
तडप रही हर रागिनी, तडप रहा हर राग
सौभाग्य सास का विलख विलख ये कह रहा
ये कौन भगा प्यार की रवानी लूट के ।
गिरपडी है जिन्दगानी आज टूट के ।
अलग अलग न चल ओ आदमी, अलग अलग

अभी अन्धेरा पास रे।

अभी उदय ने करवट ली है, अभी अन्धेरा पास रे।
अभी रुण है तेरे, मेरे जीने का विश्वास रे।
अभी अन्धेरा पास रे।

अभी रश्मियो के सीने पर रात खडी इठला रही
अभी जिन्दगी की सासो पर मौत की बदरी छा रही
अभी दबाके बैठा हर उदयाचल को उपहास रे।
अभी अन्धेरा पास रे।

अभी काफिला तूफानो का आ पाया है दूर नही
अभी चेतना के मस्तक पर लगा अरुण सिन्दूर नही
अभी मुक्त हो सका न जनगण अभी वो मनसे दास रे
अभी अन्धेरा पास रे।

अभी हमारे नयन बन्द है अभी लगन कमजोर है
अभी हमारे अधरा पर केवल शशव-सा शोर है
अभी हमारे राम भोगते फिरते है वनवास रे।
अभी अन्धेरा पास रे।

अभी हमारी श्रद्धा पाषाणो से मन बहला रही
अभी हमारी सेवा शैतानो के घर इठला रही
अभी कहा पहचान सके है हम अपना मधुमास रे।
अभी अन्धेरा पास रे।

मै तो दीप जलाऊंगा।

तुम कहते हो चाद को ढूढो, मुझे दिवाकर से है प्यार
तुम कहते हो गोपण शुभकर, मै कहता शुभकर सचार
तुझमे मुझमे इतना अन्तर, कैसे एक बनेगी बात
मुझको इच्छित किरणा का दल, तुझे सितारो की बारात
लो तुम निशि-गन्धा की सौरभ, मैं तो सुबह बुलाऊगा।
म तो दीप जलाऊगा।

तुम भी प्यासे, मैं भी प्यासा, प्यास प्यास मे बडा है भेद
तुम लका-पथ के पथ-दर्शक, मै सरयू-पथ का सकेत
देख रहे तुम केवल नौका, ढूढ रहा हू मै पतवार
देख रहे तुम जिस नूपुर को, मै उस नूपुर का आधार
तुम चाहे झूमो विषधर वन, मं तो बीन बजाऊगा।
मै तो दीप जलाऊंगा।

तुम कहते हो कुन्दन ढालो, कुन्दन से घर-द्वार सजालो
मैं कहता हू कुन्दन वाला, मिट्टी के रग को अपना लो
मिट्टी का सिगार सुहाना, सुखदायक जाना पहचाना
सत्य सुरजित सासो से नित, गूज रहा है यही तराना
तुम चाहे भूलो भूला स्वर, मैं तो भूल न पाऊगा !
मैं तो दीप जलाऊगा !

चन्दन वेचू, चिता सजाऊँ, तोड़ फूल कुचल कर मूल
तुम चाहे ऐसा करलो पर मैं न करूँगा ऐसी भूल
मन्दिर की मूरत क्या पूजू, ढूढू किस कारण भगवान
जब मैं देख रहा हूँ प्रतिपल हर मानव मे इक भगवान
तुम जिस अनदेखे से उलझे, मैं तो उलझ न पाऊगा !
मैं तो दीप जलाऊँगा !

तुम जिस सुख का मन ही मन मे प्रतिक्षण करते हो आह्वान
उस सुख के पहलू मे मैं तो देख रहा पलते तूफान
प्राण जिसे तुम मान रहे हो उसमे बैठा है अवसान
लक्ष्य अगर व्यापक करलो तो स्वय यह लोगे तुम पहचान
तुम मानो मत मानो पर मैं बार-बार यह गाऊगा !
मैं तो दीप जलाऊगा !

एक प्रकाश दीप का होता, एक चिता का भी होता
एक दण्ड दुश्मन का होता एक पिता का भी होता
सुखद पिता का दण्ड मगर दुश्मन का होता सुकर नही
सुखद प्रकाश दीप का लेकिन चिता का होता सुखद नही
तुम टालो इस बात को लेकिन मैं तो टाल न पाऊगा ।
मैं तो दी दीप जलाऊगा !

मैं एकाकी नहीं चलूंगा।

मैं एकाकी नहीं चलूंगा, साथी साथ निभाना होगा।

दूर दूर रहने की आदत देख, रहा मैं बनी तुम्हारी
लेकिन मैं बनता जाता हूं सतत पास का प्रबल पुजारी
प्रथा पुरातन है, विदग्ध है, अलग-अलग चलने की साथी।
अब प्राणों से प्राण, हाथ से हंसकर हाथ मिलाना होगा
मैं एकाकी नहीं चलूंगा साथी, साथ निभाना होगा।

घिरे भेद के अंगारों में सुमन हमारे विश्वासों के
दबे प्रपंचों बीच पन्थ है तेरे मेरे उल्लासों के
बना रहा इतिहास कहाँ से भटके हैं हम मार्ग भूलकर
अपने भूले मन को अपने आप हमें समझाना होगा।
मैं एकाकी नहीं चलूंगा साथी, साथ निभाना होगा।

मैं एकाकी तब चलता जब साधें होतीं अलग हमारी
देश, दिवस, मध्याह्न, सांझ ये रातें होतीं अलग हमारी
लख अटूट सामीप्य दृगों का क्यों दुराव दल-दल में देख
मैं तो दे दूंगा बस तुमको मुझको तुम्हें मनाना होगा।
मैं एकाकी नहीं चलूंगा साथी, साथ निभाना होगा।

मेरा गीत

कण-कण मे इस जमीन के मेरा बसरा है।
उजाला ही उजाला है कहा अन्धेरा है।
पाई यह रहा ये मेरा घर म इसके वास्ते
मैं कहता हू विश्वास से ससार मेरा है।

ये धान भरे खेत बने मेरे वास्ते
ये प्यार भरे गान बने मेरे वास्ते
मैं दुनिया का हू, दुनिया है ये मेरे वास्ते
इसका हरेक फूल हर सिंगार मेरा है।
उजाला ही उजाला है कहा अन्धेरा है।

सब भर रहे है मेरी खुशियो से झोलियाँ
इनकी ठिठोलियो मे छुपा प्यार मेरा है।
उजाला ही उजाला है कहा अन्धेरा है।

कुछ लोग समझते मुझे टूटा हुआ तारा
कुछ लोग समझते है ये है इश्क का मारा
कुछ वेसमझ ये कहते है पागल है वेचारा
लेकिन मैं समझता हू क्या अधिकार मेरा है।
उजाला ही उजाला है कहाँ अन्धेरा है।

कुछ लोग चश्मे पहनते है रंग वदल-वदल
इसीलिये चलना उन्हे पडता सम्भल-सम्भल
मेरी तरह वो चल नही सकते मचल मचल
सब को दू जिन्दगी, यही व्यापार मेरा है।
उजाला ही उजाला है कहा अन्धेरा है।

जो हसरतें हसने से पहले टूटने लगती
जो किस्मते वनने से पहले फूटने लगती
जो हरकतें हलचल से पहले रूठने लगती
मैं उनके वास्ते हू, यह विचार मेरा है।
उजाला ही उजाला है कहाँ अन्धेरा है।
कण कण मेरी जमीन का मेरा वसेरा है।

मेरा गीत

इस बार गीत मेरा मुझको फिर से दोहराने दो।
मत बाधो बन्धन मे मुझको, जरा झूम के गाने दो।
राहत के भूखे जीवन ने फिर मुझे पुकारा है
मुझको उन भूखो के जीवन का बल लौटाने दो।
मत बाधो बन्धन मे मुझको, जरा झूम के गाने दो।

उस भूखे जीवन को अपनी मन्जिल का पता नही
मन्जिल का पता हो कैसे जब दिल का ही पता नही
अनजान दिशा की ओर चले वे कदम सिसकते है
उन कदमों को मेरे गीतों की दिशा दिखाने दो।
मत बाधो बन्धन मे मुझको, जरा झूम के गाने दो।

यह कोलाहल से घबराकर तन्हाई माग रहा
वह क्रन्दन, रदा मे तंग आकर शहनाई माग रहा
वह देखो, कोई पनघट के है पास मगर प्यासा
प्यासी आखों से रह रह कर अरणाई माग रहा
मं नही देख सकता याचक की आशा के आँसू
मुझको याचक का स्वर साधक मन तक पहुचाने दो।
मत बाधो बन्धन मे मुझको, जरा झूम के गाने दो।

शायद तुम मुझको शोक के सौ सौ सावन दे दोगे
लेकिन यह कैसे मानू मं, मन भावन दे दोगे
मैं वन वन फिरते राम सिया का दुखडा देख रहा
क्या उनको तुम फिर से उनका प्रिय आगन दे दोगे
तुम को लका के स्वर्णिम सपनो ने बहकाया है
मुझको बहकाओ मत उजडी, बगिया महकाने दो।
मत बाधो बन्धन मे मुझ को जरा झूम के गाने दो।

इक जगह रुका जो जल वह जल गन्दा हो जाता है
सौ जगह झुका जो शिर वह शिर गजा हो जाता है
केवल अपने फल की जिस दिल को चिन्ता घेर गई
वह दिल क्या दिल है, वह दिल तो अन्धा हो जाता है
मेरी आँखे मेरे गीता के बल से रोशन है
इसलिये रुको, मुझको मेरी आखे सहलाने दो।
मत बाँधो बन्धन मे मुझको, जरा झूम के गाने दो।
इकबार गीत मेरा मुझको फिर से दोहराने दो।

हर कदम पर नया गीत लिखता हू मैं

हर कदम पर मुझे एक ठोकर लगी
हर कदम पर हृदय गुनगुनाने लगा
लाख तूफान आये, मै मचला नही
दद भी झेप कर गिडगिडाने लगा
आग पहलू में मेरे पनाह पा रही
हर कदम पर नया दीप रखता हू मै
हर कदम पर नया गीत लिखता हू मै

कल्पना बुद्ध है, साधना शुद्ध है
कामना एक ही लक्ष्य साधे खडी
फूल मुर्झा रहे, शूल बल पा रहे
तोड दू शूल को, आस यह हर घडी
बर्छिया आपदा की कदम छेदती
बढ रहा हू मगर कब बिलखता हू मैं
हर कदम पर नया गीत लिखता हू मै

मुस्कुराती नई पौध की है कसम
मै बढूगा हमेशा, रुकूगा नही
आदमी को अमन बख्शना है मुझे—
मौत के सामने भी झुकूगा नही
दर्द मेरा बदल कर हसी बन गया
विश्व भर के जहर को निगलता हू म
हर कदम पर नया गीत लिखता हू मैं

मै आदमी वना रहा

नवीन विश्व के लिये, नवीन भाव से भरा ।
नवीन रक्त दान दे, मैं आदमी वना रहा ।
मैं आदमी बना रहा ।

कि जिसका एक एक स्वर सुचेतना से युक्त हो
विशाल हो न वह स्वय विभक्त हो, असक्त हो
न जिसके हाथ से कभी जला हुआ दिया बुझे
सदा कुटिल कराल तत्व नष्ठ भ्रष्ट हो झुके
विरान वाटिका मे म नये कुसुम खिला रहा !
मैं आदमी बना रहा, मै आदमी वना रहा !

म दीप वह जला रहा जो आधियों मे भी जले
मैं वृक्ष वह लगा रहा जो युग-युगो तलक फले
मै गीत वह सुना रहा जो जिन्दगी को गूँज दे
मैं राग वह सुना रहा जो शक्ति-मन्त्र फूक दे
विकास-पथ स्वय का दिल के जगमगा रहा ।
मं आदमी बना रहा, मै आदमी वना रहा ।

एक ठोकर और खाने दे मुझे !

एक ठोकर और खाने दे मुझे, दिल की ताक्त आजमाने दे मुझे !
मानता हू दौर है यह लूट का, लूट मे कुछ तो लुटाने दे मुझे !

दिल किसी का हो मगर टूटे नही
हाथ आकर हाथ से छूटे नही
जिन्दगी तो खुश है, मेरे पास आ
चाहता हू, मौत भी रूठे नही
गीत बस ऐसे ही कुछ दो-चार लिख, दो घडी तो गुनगुनाने दे मुझे !
एक ठोकर और खाने दे मुझे !

अस्लियत ने फिर पुकारा है मुझे
प्यार से मैंने सवारा है मुझे
इसलिये हरगिज मैं बिक सकता नही
लूट ले कोई, गवारा है मुझे
लूटने वालों की बहकी प्यास को, आखिरी प्याला पिलाने दे मुझे !
एक ठोकर और खाने दे मुझे !

चाह मेरी मुक्त है, मैं मुक्त हूं
सोच लेना यह न तुम कि विरक्त हू
अङ्ग हो, या रूप हो, या वल हो तुम
मै धमनिया मे जो वहता, रक्त हू
भक्त हू हर प्राण का, हर प्राण पर, प्यार का घन वन के छाने दे मुझे।
एक ठोकर और खाने दे मुझे।

दीप मन मे जल रहा विश्वास का
म नही हू दास वहकी प्यास का
जिन्दगी मुझको मिली इन्सान की
यत्न वनना है मुझे हर आस का
विघ्न के तूफान उठ आ सामने, प्यार कुछ तेरा भी पाने दे मुझे।
एक ठोकर और खाने दे मुझे।

जी रहा हू, आखिरी दम के लिये
पी रहा हू, गम को मैं गम के लिये
शूल जितने भी है मुझको सौप दो।
भेजकर दो फूल हमदम के लिये
आग अन्तिम कह न पाये वात यह, एक कायर को जलाने दे मुझे।
एक ठोकर और खाने दे मुझे।

मै अन्तहीन

मैं अन्तहीन, मैं अन्तहीन, मुझमे अनन्त की बात करो !
मुझमे दिगन्त की बात करो, मुझ से वसन्त की बात करो !

मैं प्रथम पुरुष, मैं प्रथम बीज, मुझमे रह सकता विलग कौन ?
मैं महाउदय का शखनाद, मैं महाशून्य का मुखर मौन !
मैं प्राण-वायु का मूत-रूप, मैं सतस्वरूप मैं विश्व-रूप
हर पतझड और प्रभजन का अन्तर स्वर मैं ही हू अनूप
मुझमे सकट के हर क्षण मे आशा, प्रबन्ध की बात करो !
मैं अन्तहीन, मैं अन्तहीन, मुझमे अनन्त की बात करो !
मुझमे दिगन्त की बात करो, मुझमे वसन्त की बात करो !

दल-दल, दावानल, या मरघट, मैं मब के चीर चला घूघट
मैं रङ्ग अङ्ग से हू आगे, मै यदि हू कुछ तो हू हृद्‌तट
हर तृषित प्राण का मै पनघट, हर व्यथित प्राण का मैं प्रियवट
हर नगर डगर, का मधुर गीत, हर वण्ठ-कण्ठ का स्वर उद्‌भट
मुझको काटो कलियो से क्या, मुझसे सुगन्ध की वात करो ।
म अन्तहीन, मैं अन्तहीन, मुझसे अनन्त की वात करो ।
मुझसे दिगन्त की वात करो, मुझसे सुगन्ध की वात करो ।

मैं निखिल अकृत्रिम, नैसर्गिक लहरो-किरणो के क्रम जैसा
मैं सबल, शान्ति, सतोप-केन्द्र शिव रूप श्रमिक के श्रम जैसा
जीवन हूँ जड चेतन सवका बस जीवन का हू अनुरागी
मुझको इसका कुछ क्षोभ नही, जग मुझको कहता बैरागी
मुझसे त्यागी वागी-सी नही, इक ज्ञानवन्तसी बात करो ।
म अन्तहीन, म अन्तहीन, मुझसे अनन्त की वात करो ।
मुझसे दिगन्त की बात करो, मुझ से वसन्त की बात करो ।

मैंने जीना सीख लिया है।

जीवन की उलझी गलियों में
गिरते, पड़ते, ठोकर खाते
निज दिग्भ्रम में ही मैंने
अब जीवन पथ ढूंढ लिया है।
मैंने जीना सीख लिया है।

ऊबड़-खाबड़ इस जीवन में
कितनी बार बचा हूँ मर-मर
कितनी बार बही हैं आँखें
निर्झरणी-सी अविरल झर झर
विपदा के झंझावातों में मन लड़ना सीख लिया है।
मैंने जीना सीख लिया है।

कम्पन करता था तन सारा
चट्टानो को देख देख कर
कदम बढाया करता था मैं
आगे गुस्ता देख झेंपकर
लेकिन अब तो एवरेस्ट पर भी तो चढना सीख लिया है।
मैंने जीना सीख लिया है।

पहले वाणी रुक जाया करती—
थी चन्द जनो के आगे
स्वर जाते थे टूट टूट ज्यो
टूटा करते कच्चे धागे
पर अब तो निर्भय हो मैंने गजन करना सीख लिया है।
मैंने जीना सीख लिया है।

पहले मैं डरता था दिल मे
देख अमावस काली काली
सूरज भी लगता था जैसे
अगारो की होती थाली
लेकिन अब आलोक बना खुद रवि से नाता जोड लिया है।
मने जीना सीख लिया है।

पहले देख धधकता मरघट
मृत्यु शीश पर छा जाती थी
देख चिता की भस्म हृदय के
सुख को चिन्ता खा जाती थी
लेकिन अब तो जड मरघट मे जिन्दा रहना सीख लिया है।
मैंने जीना सीख लिया है।

पहले मन भावो का दीपक
लघु झोंको से बुझ जाता था
छोटी - मोटी चट्टानो से
बहता सोता रुक जाता था
लेकिन अब तो रोक आंधिया, सलिल बहाना सीख लिया है!
मने जीना सीख लिया है!

पहले मेरे आर्द्र हृदय से
अनुचित लाभ उठाता था जग
म जा बहकावे मे आकर
कभी भूल जाता था निज मग
लेकिन अब तो पथ निश्चित कर मैंने चलना सीख लिया है।
मने जीना सीख लिया है!

दीपक सदा जलेगा

जब तक मैं जिन्दा हू जग मे दीपक सदा जलेगा।

घृत की जगह सींचकर शोणित
इसको मैं बल दूंगा।
फैलाकर आलोक अपरिमित
अन्धकार हर लूंगा।
सदा रहेगा प्रात किसी को कोई नही छलेगा।
जब तक मैं जिन्दा हू जग मे दीपक सदा जलेगा।

रन्ध्र रन्ध्र मे भूमण्डल के
स्नेह लहर लहरेगी।
सत्य सगठन ध्वजा,
हिमालय पर निशि दिन फहरेगी
मानव के दिल मे मानव का शाश्वत प्यार पलेगा।
जब तक मैं जिन्दा हू जग मे दीपक सदा जलेगा।

नष्ट शक्ति होगी आधी की
झझावात रुकेगा।
मन्द मन्द मृदु पवन चलेगी
नित नव फूल खिलेगें।
गुण की गरिमा गायेगा जग अवगुण सतत गलेगा।
जब तक मैं जिन्दा हू जगमे दीपक सदा जलेगा।

कहाँ गये

दीप भी जला लिया प्रकाश भी बुला लिया
भटक रहे है वे कहा जिन्हे प्रकाश चाहिये।

तार झनझना रहे
कण्ठ गुनगुना रहे
मेघ भी बरस रहे,
प्रसून भी सरस रहे।
भटक रहे है वे कहा जिन्हे सुवास चाहिये।

चरन स्वतन्त्र हो गये
नयन स्वतन्त्र हो गये
लगन स्वतन्त्र हो गई
शकुन स्वतन्त्र हो गये
भटक रहे हैं वे कहाँ जिन्हे विराम चाहिये
दीप भी जला लिया प्रकाश भी बुला लिया
भटक रहे हैं वे कहाँ जिन्हे प्रकाश चाहिये

बोलो जय जय भारती

एक हाथ मे दीपक लेकर एक हाथ मे आरती
अन्तर मे ले प्यार विश्व का बोलो जय जय भारती।

कण-कण से आवाज आ रही हमे चाहिये एकता।
नही चाहिये मन्दिर, मस्जिद, गिरजा घर के देवता।
धिक्कारो उस तारक को जो नही किसी को तारती।
बोलो जय जय भारती।

कह दो हम गगा के बेटे औ' यमुना के प्रान है।
रक्षा का हथियार हमारा बासुरिया की तान है।
हम उस मा के लाल जो जग पर तन मन अपना वारती।
बोलो जय जय भारती।

हमने तो सिंगार किया है अपना नित बलिदानो से।
गौरव पनपा नही हमारा महलों से मयखाना से।
हम उस मिट्टी के बन्दे जो गिरते प्रान उबारती।
बोलो जय जय भारती।

हमने मानव की सासो को बख्शा शाश्वत प्यार है।
हमे विश्व को कुछ कहने का इसीलिये अधिकार है।
हम उस वाणी के स्वर है जो पावन मन्त्र उचारती।
बोलो जय जय भारती।

मत दीप जलाओ दीवारो पर दीवानो।

मत दीप जलाओ दीवारो पर दीवानो।
यह वेला है अन्तर का दीप जलाने की।
यह वेला है सोया इन्सान जगाने की।
यह वेला है मन का भगवान जगाने की।

घर, दर, खिडकी, छत, छप्पर पर दीपक रखने से क्या होगा।
कागज की लक्ष्मी मूरत पर नित गिर रखने से क्या होगा।
क्या लक्ष्मी की जयकारो से खेता मे धान उपजता है।
क्या मिल मालिक मजदूरो का इस से सघष सुलझता है।

क्या इससे बहन बहू, बेटी, का अस्मत बिकना रुका कभी।
क्या इससे पास पडोसी के घरका भूखापन मिटा कभी।
लाखो आवृतिया जन्म हुई इन पर्वो की त्योहारों की।
लेकिन हालत कब सुधर सकी भूखे नगे लाचारो की।
यह जगमग माला जाली है यह दीपक माला काली है।
मित्रो ये रस्मे सारी है अपना ईमान लुटाने की।

मत दीप जलाओ दीवारो पर दीवानों।
यह वेला है अन्तर का दीप जगाने की।
यह वेला है सोया इन्सान जगाने की।
यह वेला है मन का भगवान जगाने की।

८ घर-घर घी के दीप जलाओ

आज उठो स्वातन्त्र्य पर्व पर घर घर घी के दीप जलाओ।

कृपा, कर्म, दृढ़ता, पटुता से एक नया इतिहास रचो तुम
कृत्रिम आभरणो को तज कर सत्य, स्नेह से सदा सजो तुम
किसने तुम्हे स्वय के घर मे आग लगाना सिखा दिया है
किसने तुम्हे दुखद मदिरा का प्याला भरकर पिला दिया है
किसने कहा तुम्हे बतलाओ प्रात मे मुख ढक सो जाना ?
सर्वनाश को स्वर्ग समझकर पागल बन उसमे खो जाना।
उठो लिये औदार्य विश्व से सही शुद्ध अनुराग बढाओ
घर घर घी के दीप जलाओ।

मत भूलो उन अमर शहीदो की लासानी वह कुर्बानी
सब कुछ तजकर निकल पडे थे जो नर रचने नई कहानी
मानव जीवन का कलक परतन्त्र शृ खला खण्डित करने
शुभ स्वातन्त्र्य मृदुल मेघों से सकल विश्व को मण्डित करने
दण्डित करने उन कुपुत्र कटुता खलता से पूर्ण जनो को
उन वीरो की ध्येय धरा पर जगमग ज्योति जलाओ
घर घर घी के दीप जलाओ !

देखो वह बेहाल भटकती चेतू की इकलौती बेटी
रामू की अम्मां को देखो पडी हुई है भूखी लेटी
कमल विचारा सारे दिन ऑफिस मे बैठा श्रम करता है
फिर भी पूरा पेट न भरता नित आधा भूखों मरता है
बीवी के स्तन शुष्क दूध बिन बच्चे तिल तिल कर मरते हैं
लाखो पुरुष यहा योही आये दिन अनचाहे मरते हैं
ऐसी विकट दशा मे मिलकर जीने का सिद्धान्त बनाओ ।
घर घर घी के दीप जलाओ !

जाने क्यो तुम आते मेरे पास नही

जाने क्यों तुम आते मेरे पास नही
तुम बिन मैं लिख सकता नव इतिहास नही

भेद का विष यू कब तक उगले जाओगे
खेद की गाथा कब तक लिखते जाओगे
हाथ खडे यू कब तक मलने जाओगे
किस बल पर जो माग रहे वह पाओगे
उदय मिलन के उपवन मे मुस्काता है
इस पर तुम को क्यों होता विश्वास नही
जाने क्यों तुम आते मेरे पास नही !

देख रहा हू, तुम चलने को विलख रहे
लेकिन गति क्या होती तुम को ज्ञात नही
गति जो देता प्रतिपल तेरे जीवन को
उससे जा तुम कभी मिलाते हाथ नही
गति मिलती है मति से मति के बन्दों का
तुम क्षण भर भी कर पाते सहवास नही
जाने क्यो तुम आते मेरे पास नही !

चाहों का तूफान लिये तुम चलते हो
साधों का समसान लिये तुम जलते हो
इस पर भी विश्वास तुम्हे तुम चलते हो
लेकिन मैं तो देख रहा तुम ढलते हो
अलग-अलग जो जीते बन कर अगारे
उनको मिल सकता हरगिज मधुमास नही
जाने क्यो तुम आते मेरे पास नही !

गरीब !

लुटने न दूगा मं कभी !!
मिटने न दूगा मैं कभी अधिकार तुम्हारा
दो मीत मुझे साथ में हूं प्यार तुम्हारा।

है एक नजर मेरी डाकुओं की भीड़ पर
है एक नजर मेरी तेरे लुटते नीड़ पर
मैं सुन रहा हूं मीत। हाहाकार तुम्हारा
दो मीत मुझे साथ मैं हू प्यार तुम्हारा।

तुम देवता ईमान के भगवान के स्वरूप
गरीब अब न सहनी होगी तुम को अधिक धूप
चमका के रहूगा तुम्हारे चैन का तारा
दो मीत मुझे साथ मैं हू प्यार तुम्हारा।

आवाज मैं मेरी उठो आवाज मिलाओ
हमदम मेरे, मेरे सुरो से साज मिलाओ
साहस ने मेरे आज तुम्हे फिर से पुकारा
दो मीत मुझे साथ मैं हू प्यार तुम्हारा।

देखो सावन सूख न जाये ।

हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर है पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल

पवन का अन्तर काप रहा है, गगन की आखो मे है रोना
बनता जाता, दिन प्रति दिन भूगोल व्यथा के कारण बौना
कोलाहल की उमस कर रही बढकर क्रन्दन का अभिवादन
कैसे, करे बासुरी, मधुरिम नव रागिनियों का प्रतिपादन
भेद रहा है तिमिर, सरों से नवल प्रभाती का अरुणाचल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर है पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल ।

बलिवेदी के फूल, वासना, के आगन मे बिखर रहे है
बन सहस्त्र कर, काटे कलिदल को विदण, कर निखर रहे है
दुग्धालय की देखभाल हित है नियुक्त बिल्ली के बेटे
विद्यालय निन्द्रा सग क्रीडा कार्य कर रहे लेटे-लेटे
मति की माग मिट रही, गति के नयनों को डस रहा है काजल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर है पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल ।

क्रय विक्रय के दाव-पेच से कौन रहा है आज विन जले
किसको छोड रहा है कोई इस दुनिया मे आज विन छले
हालत देख आज को निश्चय कल ये ही अनुमान घटेगा
पशुवत् पुरुषो के चमडे का भी खूनी नीलाम, लगेगा
बाध रही जिह्वा जिह्वा को चाँदी की पेचीली साँकल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर है पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल।

जीवन की खुशबू चिमनी के धूँवे से घुटती जाती है
हर बस्ती अपने वासिन्दों के हाथो लुटती जाती है
कल्याणी वाणी की बस्ती पर छाया देखा वीराना
रथ अपने रथ वाहक से ही होकर भटक रहा अनजाना
हर मुखडे पर दुखडा छाया हर मन की मञ्जिल है घायल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर है पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल।

किसे सुनाये कोई जाकर अपने मनका रोना धोना
सब का लक्ष्य बन रहा पाये केवल चाँदी केवल सोना
गलियो मे सड रही साधको की नव-साधक शुचि सन्तान
असफल हो भू पर जीने मे नभ को भेद रहा विज्ञान
देखो कही न हो जाये हम बारूदी दुनिया के कायल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर है पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल।

ओ उठ आवाज दे !

ओ उठ आवाज दे तू 'दुनिया को प्यार दे तू' ।
सोये है धरती पर जो भूलकर अपने मुजस्सल को

उनको उल्लास
अभिनव हास
नव विश्वास दे तू ।
ओ उठ आवाज दे तू ।

देखो वह भूखा नगा ताक रहा खेतों का राजा
सोचो मजदूर का हर रोज क्यो निकले जनाजा
उनका क्यो जीवन सूना
शोषण बढता दिन दूना
आधी से ज्यादा दुनिया मागती इन्साफ दे तू
ओ उठ आवाज दे तू ।

सदियो से देख रहा म तू करता पत्थर से बाते
जिन्दे इन्सानो के खातिर तेरे दिल मे है घाते
जिन्दो की जान जलाना मुर्दों से प्रीत लगाना
दुनिया की इस गन्दी तासीर को अगार दे तू
ओ उठ आवाज दे तू ।
ओ उठ आवाज दे ।

[मैं गीत सुनाता जाऊंगा

नये मनुष्य !

नये मनुष्य मृत्यु से डरो नही, बढ़े चलो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो बढ़े चलो !

बढ़े चलो तिमिर घटा को वीरता से काटते
बढ़े चलो विपत्ति खाइयो को आज पाटते
बढ़े चलो कुरीतियों के बन्ध तोड़ते हुए
बढ़े चलो सुरीतियों के छन्द जोड़ते हुए
सुशान्त, सभ्य, सज्जनों को सगठित किये चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

वह जिन्दगी क्या, जिन्दगी कि जिसमे वीरता नही
वह मौत भी क्या, मौत है कि जिसमे शूरता नही
वह देह भी क्या देह है, न जिसमे हो मनुष्यता
वह प्राण भी क्या, प्राण है न जिसमें हो पवित्रता
घिरे तूफान लाख, पर झूको नही बढ़े चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

पुकारती वसुन्धरा, दिशाये भी पुकारती
पुकारता गगन, नवीन रश्मिया पुकारती
असख्य आधिया घिरे, करो निसक सामना
भविष्य सौख्यमय बने, बढ़ो यही ले भावना
बने तुम्हारे जोश से कई नई कहानियाँ
सुघड बने, सुखद बने, कई दुखी जवानियाँ
गरल घटों को फोडते, सुधा "सुधार" ले चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

मै तुम्हे फिर से नया इतिहास दूंगा

मैं तुम्हे फिर से नया इतिहास दूगा।
म तुम्हे फिर से नया विश्वास दूंगा।

म तुम्हारी कामना का गीत बनकर
मै तुम्हारी भावना का मीत बनकर।
मिट न पाये जो कभी वह सास दूगा।
मै तुम्हे फिर से नया इतिहास दूगा।
मैं तुम्ह फिर से नया विश्वास दूगा।

तुम न मुझको मीत अब तक जान पाये।
किन्तु मैंने नित तुम्हारे गीत गाये।
मीत मैं तुमको मिलन की प्यास दूगा
म तुम्हे फिर से नया इतिहास दूगा।
मै तुम्हे फिर से नया विश्वास दूगा।

घेरती रहती तुम्हे प्रतिपल प्रयोयें।
छेड़ती रहती तुम्हे प्रतिपल व्यथायें।
मै तुम्ह उनमे छुडा मधुमास दूगा।
मैं तुम्ह फिर से नया इतिहास दूगा।
मै तुम्हे फिर से नया विश्वास दूगा।

विश्वास-गीत

पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम।
अभिशाप भरा मधुमास न फिर लौटाने देंगे हम।

नई सृष्टि को, नई दृष्टि निर्माण नया देगी।
इन्सान नया अरमान नया, विज्ञान नया देगी।
सन्ताप भरा आकाश न फिर रच पाने देंगे हम।
पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम।

हम तुलसी, सूर, कबीर के बेटे दान नहीं लेंगे।
वरदान, ज्ञान, उत्थान के दाता प्राण नहीं लेंगे।
दुर्जाप भरा विश्वास न फिर जन्माने देंगे हम।
पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम।

उत्तेजित दुमति मान स्वयं हिमगिरि से हारेंगे।
जो जीवन से अनजान हमेशा जग से हारेंगे।
परिताप भरी दुर्प्यास न फिर जग पाने देंगे हम।
पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम।

हम अर्जुन के गाण्डीव जिन्दगी के दीवाने हैं
हम परशुराम के हाथ विजय ही पानेवाले है।
रिपुताप भरा उपहास न फिर पनपाने देंगे हम
पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम।

आग बर्फ मे लगी खून से बुझायेंगे

आग बर्फ मे लगी खून से बुझायेंगे
किया नही किसीने वह करके हम दिखायेंगे
इतराके चल रहे है जो उन्हें सबक सिखायेंगे
सरहद पे अपनी शान का अबुझ दिया जलायेंगे
आग बर्फ मे लगी खून से बुझायेंगे।

किसने कहा खतरे मे है हमारी आज आबरू
खतरा बचाता फिर रहा है आज अपनी आबरू
वह जीत चाहता है, हार से हो जो दबा हुआ
हमारा ध्वज तो जीत हार से अलग खड़ा हुआ
हम आवगे। हमले से हम कभी न डगमगायेंगे
आग बर्फ मे लगी खून से बुझायेंगे।

मुकाबले पे फिर कोई मुकाबला किया करे
कोई गुनाह किया करे कोई गिला किया करे
हम हर गुनाह को बिना सजा मिटाते जायेंगे
शिकायतों के जन्म को क्या मिटाते जायेंगे
बदली हुई नजर का रुख बदल के डग बढ़ायेंगे
आग बर्फ मे लगी खून से बुझायेंगे।

लगी किसी के घर मे आग, आँच हमको लग रही
दिया यहाँ पे जल रहा, चिता वहाँ सुलग रही
स्वय के सिर के बोझ से दब के कोई गिर रहा
हमारा चैन देखकर, कोई जहर उगल रहा
यह जानकर चले थे हम यह मान चलते आयेंगे
आग बर्फ मे लगी खून से बुझायेंगे !

हम पुत्र है प्रताप के, शत्रु है हर पाप के
वरदान के धनी हैं हम, नही किसी अभिशाप के
किसीके हक को छीनना हमे कभी रुचा नही
दिया जलाया हमने वह किसीसे जो बुझा नही
है जब तलक जमी फलक झलक यही दिखायेंगे
आग बर्फ मे लगी खून से बुझायेंगे ।

सम्भव नही सूरज की रोशनी का हाथ थामना
सम्भव नही हमारी कोई डगमगादे भावना
सम्भव नही विफल करे हमारी कोई साधना
सम्भव नही कोई करे हमारे बल का सामना
सम्भव है क्या औ' क्या नही यह अब ला हम बतायेंगे
आग बर्फ मे लगी खूमेन बुझायेंगे ।
खून से

मेरा हिन्दुस्तान

डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान।
मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान।

गङ्गा, गीता, सियाराम, इसके भुजबल की धरती
इसकी आशा सब की आशा का संशोधन करती
सकल विश्व के हित होता है इसका हर अभियान
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान।
मेरा हिन्दुस्तान, मुक्ति के दूतों का भगवान।

खेद है दुनिया समझ न पाती इसकी क्या अभिलाषा
शायद दुनिया समझ न पाती जीवन की परिभाषा
इसने जीवन दिया है जगको दिया है अभ्युत्थान।
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान।
मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान।

मेरा हिन्दुस्तान रहा है नित्य अमर बलिदानी
मेरा हिन्दुस्तान रहा है नित्य अमर वरदानी
राम समझता रहा यह जग को बनके खुद हनुमान
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान।
मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान।

प्रेम का मन्दिर स्नेह का उपवन ये है सत्य का गीत
इसके कण कण से गूजा नित मिलन भरा संगीत
दी है हमेशा जगको इसने उद्घोषित मुस्कान।
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान।
मेरा हिन्दुस्तान, मुक्ति के दूतो का भगवान।

आदर इसके तन की चादर, श्रद्धा इसकी धोती
इसीलिये ये जगको देता, रहा जवाहर मोती
इसका हर बच्चा पौरुष है, शिवा है औ' चौहान।
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान।
मेरा हिन्दुस्तान, मुक्ति के दूतो का भगवान।

देश निराला

देश निराला है, मेरा देश निराला
मेरे देश ने ससार को दिया है उजाला
मेरे देश के गौरव पे कीचड जिसने उछाला
इतिहास ने मुख उसका किया है सदा काला

मेरे देश सा कोई देश और हो नही सकता
मेरा देश बीज फूट का कभी बो नही सकता
मेरे देश का सिंगार नित करती रही क्षमा
मेरा देश है सदा सजग कभी सो नहीं सकता

मेरे देश ने पाई है तपोवन से जवानी
मेरे देश की इसलिये है ऐसी कहानी
सुनकर जिसे हर शीश गर्व से उठा ऊंचा
बनता रहा सदा हमेशा वीर औ' दानी
इन्सानियत का दामन नित गिरने से सम्भाला
देश निराला है, मेरा देश निराला

मेरे देश ने ससार को सम्मान दिया है
सुख, शान्ति, स्नेह, शक्ति का वरदान दिया है
माना कि ये रहा है खुद हमेशा कष्ट मे
इसपर भी इसने चैन का सामान दिया है
विज्ञान के तूफान से ये मिट नही सकता
हरगिज किसी शैतान से ये लुट नही सकता

गिर को हमेशा इसके दुलारा है राम ने
शिर इसका कभी इसलिये कहीं भुक नही सकता
उस देश को मिटा सकेगा कौन बताओ ?
जिस देश मे मसान को कहते है शिवाला
देश निराला है, मेरा देश निराला

इस देश की धरती पे सूरज मेहरबान है
इस देश की मिट्टी से गूजा सामगान है
इस देश की ध्वजा पे अशाकी निशान है
इसीलिये इस देश की महिमा महान है

राधा भी इसने दी है तो सीता भी इसने दी ।
सन्ध्या भी इसने दी है तो गीता भी इसने दी
बताओ ऐसी नारिया दुनिया को किसने दी ?
सोचो, वह देश क्या है ऐसी शान जिसने दी ?
हर धम को इसीने अपनी गोद मे पाला
देश निराला है, मेरा देश निराला
मेरे देश ने ससार को दिया है उजाला ।

तुम्हे कह रही है तुम्हारी कहानी

तुम्हे कह रही है तुम्हारी कहानी
न आने दो शिर तक किसी के भी पानी
बुढापा अगर आ गया हो तुम्हे तो
उठो। मेरे गीतो से लेकर जवानी

उठो। जिन्दगी यह तुम्हे कह रही है
उठो। आदमी ने तुम्हे फिर पुकारा
जमी है तुम्हारी, गगन है तुम्हारा
किरन है तुम्हारी, पवन है तुम्हारा
उठो। चादनी को, भरो गोद मे
चन्द्रमा को, भी दिखला दो अपनी रवानी
तुम्हे कह रही है तुम्हारी कहानी

सितारों के झूलों मे झूलो, उठो तुम।
न वल अपने तन का भुलाओ, उठो तुम
निराशा के पतझड मे क्यों उलझे जाते
सुआशा के उपवन मे फूलो, उठो तुम।
मैं मौसम बुलाता हू आवाज देकर
तुम झूमो उमङ्गो से लेकर जवानी
तुम्हे कह रही है तुम्हारी कहानी।

तुम मुझे पुकारते रहो !

तुम मुझे पुकारते रहो।
मैं तुझे पुकारता रहूं !
तुम मुझे सवारते रहो।
मैं तुझे सवारता रहूं।
इस तरह लुटाते मस्तियाँ
प्यार की बसाते वस्तिया
सवारते चले ये जिन्दगी, गीत ये उचारते रहो।
तुम मुझे पुकारते रहो।

तेरी मेरी एक चाह हो
तेरी मेरी एक राह हो
देखकर हमे जहाँ कही
सब के मुह पे वाह-वाह हो
बहार को बहार देके हम
सिंगार को सिंगार देके हम !
बादलों की छाव मे चलें।
आचलों के चाव मे पले, प्रीत को निखारते रहो।
तुम मुझे पुकारते रहो।

यह उम्र नित जवान ही रहे।
लबों पे एक गान ही रहे।
पडे हमारी जिस पे भी नजर
वो बन हमारी जान ही रहे।
चमन की हर गली मे झूमते
नयन की हर हसी को चूमते
लगन की हर गली मे गूजते, जीत को निहारते रहो।
तुम मुझे पुकारते रहो।

सदा है ये सनम बहार की
जिन्दा दिलो के करार की
वह जिन्दगी भी क्या है जिन्दगी—
खबर न जिसे कुछ हो प्यार की।
डूबकर किसीके प्यार मे
झनझना के दिल के तार को, मीत को सवारते रहो।
तुम मुझे पुकारते रहो।

चाह इतनी है

चाह इतनी है कि पाऊँ एक बार
एक पल तेरे हृदय के प्यार को
उम्र सारी मैं समर्पित कर रहा
प्राप्त करने बस इसी अधिकार को।

लाख उम्रें कम है तेरे प्यार से
क्योंकि तेरा प्यार अतुल पुनीत है,
किन्तु अनुकम्पा उसे कब ना मिली
जो अकिंचन है मगर सुविनीतहै
मन तो क्या मेरू भी कब ठुकरा सका
विनय बन् बहते हुए उद्गार को
चाह इतनी है कि पाऊँ एक बार
एक पल तेरे हृदय के प्यार को

गुनगुनाहट तेरे प्रानो की मधुर
क्या बुलाहट मेरी बन सकती नहीं
चुलबुलाहट तेरे चरनो की मधुर
पास की आहट क्या बन सकती नहीं
हिचकिचा कर, मुख घुमाकर, रूठ कर,
मत उभारो बीच की दीवार को!
चाह इतनी है कि पाऊँ एक बार
एक पल तेरे हृदय के प्यार को
उम्र सारी मैं समर्पित कर रहा
प्राप्त करने बस इसी अधिकार को

मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये

मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये,
वे किस लिये यहाँ पर है मुँह दिखाने आये
वे क्यू न सोचते यह की जिन्दगी मे हम तो
नाता क्यों एक भी तो अब तक निभा न पाये
रोतो के सामने जो हँसता खडा अकेला
हँसतों के सामने जो रोता खडा अकेला
कहते है उसको क्या यह वे क्यू समझ न पाये
मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये
वे किस लिये यहाँ पर है मुह दिखाने आये।

सच मुच वही है हसता जो दिल मिला के हँसता
सच मुच वही है रोता जो दिल मिला के रोता,
वे कौन है जो अब तक दिल मिला न पाये
मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये
वे किस लिये यहाँ पर है मुह दिखाने आये
हैरान हो रहा हू फितरत को देख उनकी
हैरान हो रहा हूँ हसरत को देख उनकी
सब तक गये, किसी को खुद तक बुला न पाये
मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये
वे किस लिये यहाँ पर है मुह दिखाने आये

आओ पनघट ढूंढें !

आओ हम सब मिलकर अपनी आशा के पनघट को ढूढे
एकाकी हम सब शायद पनघट को ढूढ न पायेंगे।
उम्र गुजर ही जायेगी हम प्यासे ही रह जायेंगे।

सुना है आशा का पनघट पथ घिरा हुआ है तूफानों से
प्राप्त न यह पनघट हो सकता छोटे मोटे बलिदानो से
आस के पनघट का मिल जाना बसे कोई-खेल नही है
खेल भी है यदि तो वह कोई बच्चोवाला खेल नही है
जान हथेली पर रख कर जो चल सकते है बिन घबराये
वे ही इक दिन उस पनघट के पहरेदार कहायेंगे
आओ हम सब मिल कर अपनी आशा के पनघट कोढूंढे
एकाकी हम सब शायद पनघट को ढूढ न पायेंगे।

देख रहा हू हम अपने विश्वास के दावेदार नही।
इसी लिये हम आस का पनघट पाने के हकदार नही।
नाव मे बैठे है हम लेकिन पास अभी पतवार नही।
केवल नैया के बल कोई जा सकता उसपार नही।
समाधान का सावन निष्ठा के घर बैठा बरस रहा
बिन निष्ठा के हम सावन तक कभी पहुँच ना पायेंगे
आओ हम सब मिल कर अपनी आशा के पनघट को ढूढे
एकाकी हम सब शायद पनघट को ढूढ न पायेंगे

तुम मुझे तूफान दो

तुम मुझे तूफान दो पर मैं तुम्हे मुस्कान दूंगा।
तुम मुझे अभिशाप दो, पर मैं तुम्हें वरदान दूंगा।

जानता हू तुम विवश हो, जानता हू तुम विकल हो।
इसलिये मैं नित तुम्हारी भूल सहता जा रहा हू
कोप ज्वाला से तुम्हारी दग्ध होकर भी हमेशा।
एक दिन जागोगे तुम यह बात कहता जा रहा हू।
क्या करूं प्रतिवाद करके क्या करूं फर्याद करके
तुम मुझे दो रुदन ही पर मैं तुम्हे नव गान दूंगा।
तुम मुझे तूफान दो। पर म तुम्हे मुस्कान दूंगा।

धैर्य ने मुझको सवारा, शान्ति ने मुझको दुलारा,
इस लिये हरबार मैंने—प्यार से तुम को पुकारा।
दे रहे मँझधार तुम—म देरहा तुमको किनारा।
तुम मुझे देते पतन मैं दे रहा तुम को सहारा।
एक दिन सोचोगे खुद तुम एक दिन जागोगे खुद तुम।
दो मुझे अपमान पर मैं तो तुम्हे सन्मान दूंगा
तुम मुझे तूफान दो पर मैं तुम्हे मुस्कान दूंगा।

दुनिया को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये।

दुनिया को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये।
मिटने पर कोई मागेगा प्यार नही।

जीवन की कटुता से घुट कर मरना क्या!
बाधाओ से डर कर आहे भरना क्या।
लेने की इच्छा से जीना-जीना क्या
याचित अमृत पीकर भी है पीना क्या।
देकर जो जीता आया है दुनिया मे
उसकी हो सकती प्रिय। हरगिज हार नही।
दुनिया को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये।
मिटने पर कोई मागेगा प्यार नही!

बिन बोये धरती से कब कुछ मिलता है।
फूल बिना पानी सींचे कब खिलता है।
इच्छित सामग्री श्रम से ही मिलती है।
कहीं मागने पर मिट्टी भी मिलती है।
घृणा रहा करती है संग लाचारों के,
प्रिये। किन्तु तुम तो इतनी लाचार नहीं।
दुनिया को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये।
मिटने पर कोई मागेगा प्यार नहीं।

सुखसे या दुखसे जैसे भी जीना है।
क्या लम्बा है दो दिन का तो जीना है।
क्या होगा आँसू पीकर के जी लेंगे,
अमृत दे दुनिया को खुद विष पीलेंगे
दुनिया की खुशियाली भी तो अपनी है।
मत भूलो जीवन कोई व्यापार नहीं।
दुनिया को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये,
मिटने पर कोई मागेगा प्यार नहीं।

प्राप्ति

तन, मन औ' मस्तिष्क तीन धन मैंने पाये है अनमोल।
पाने को रह गया शेष क्या, अब दुनिया मे साथी बोल।

पन्थ मिला, पाथेय मिला, क्या हुआ मिला उत्कर्ष नही।
सब कुछ, अपने आप मिल चले यह तो कोई तर्क नही।
हाथ मिले पुरुषार्थ हेतु गतिमय होने को मिला भूगोल।
पाने को रह गया शेष क्या, अब दुनिया मे साथी बोल।

भूमि मिल गई, बीज मिल गये और मिले बादल प्यारे।
ज्योतिदान कर रही रश्मिया, सुधादान ये शशि तारे।
सब कुछ अपने आप मिल रहा बिन मागे मुझको बिनमोल।
पाने को रह गया शेष क्या, अब दुनिया मे साथी बोल।

पचतत्व के प्रखर पिण्ड मे क्या है वह जो भरा नही।
लेकिन उसको मिला कहा कुछ जिसने उसको वरा नही।
मन तो मस्तिष्क कलश मे इसका पदजल लिया है घोल।
पाने को रह गया शेष क्या, अब दुनिया मे साथी बोल।

मै

जग फेर रहा है विध्वंसों की माला,
मैं निर्माणा के मन्त्र पढा करता हूँ।
जग भुला रहा पागल हो जिन तत्त्वों को,
मैं उन तत्त्वों के यन्त्र गढा करता हू।

मैं महासृजन की चाह लिये फिरता हू,
मेरे आगे बौना है महाउदय भी।
मैं सृष्टा हू, सैनिक हू और श्रमिक भी,
मुट्ठी मे मेरे जग की अजय विजय भी।

मेरे इङ्गित पर चलो अगर जीना है।
पीना है यदि जीवन भर सुख का प्याला।
सैनिक बनकर नित चलो अचचल बन कर।
मैं सेनापति हू, आगे चलने वाला।

मुझ से वल पाती श्रद्धा सदा सुहागन,
मैं पथ दिखलाता वही कि जो हो पावन
मैं उन तत्त्वों के सुमन खिलाता चलता,
जो चुने उन्हे वन जाये जग-मन भावन

मैं मौलिक हू, कोई अनुवाद नही हू।
मैने सीखा है अपने बल पर उठना।
है कौन जो मेरे पथ से मुझे हटादे।
मैं नही जानता क्या होता है झुकना।

बारूद बनाने वालो का दल-बल भी
मेरी निष्ठा से बडा नही हो सकता।
जो हिंसा मे इतिहास बिगाडा करता।
वह मेरे सम्मुख खडा नहीं हो सकता।

मै महाउदय का ओज किये चलता हू।
दुश्मन उनका जो पन्थ बीच रखते है।
बिकते रहते है जो मिथ्या के हाथो।
जब-जब भी वे उठते है तो पिटते है।

अमरत्व नही मिल सकता हरगिज उनका।
इस पद के अधिकारी होते है त्यागी।
त्यागी को कब प्राणो की होती परवाह।
उसकी आँखे नित रहती जागी-जागी।

मै हू विभ्राट जनो के पथ का पन्थी।
शोलों को शबनम बना के चलने वाला।
है कौन जो तुम मे मेरी व्यथा समझले।
मैं हू जग की तकदीर बदलने वाला।

मै

जग फेर रहा है विध्वसो की माला,
मै निर्माणों के मन्त्र पढा करता हूँ।
जग भुला रहा पागल हो जिन तत्वो को,
मैं उन तत्वों के यन्त्र गढा करता हू।

मैं महासृजन की चाह लिये फिरता हू,
मेरे आगे बौना है महाउदय भी।
मै सृष्टा हू, सैनिक हू और श्रमिक भी,
मुट्ठी मे मेरे जग की अजय विजय भी।

मेरे इङ्गित पर चलो अगर जीना है।
पीना है यदि जीवन भर सुख का प्याला।
सैनिक बनकर नित चलो अचचल बन कर।
मैं सेनापति हू, आगे चलने वाला।

मुझ से बल पाती श्रद्धा सदा सुहागन,
मैं पथ दिखलाता वही कि जो हो पावन
मैं उन तत्त्वों के सुमन खिलाता चलता,
जो चुने उन्हे बन जाये जग-मन भावन

मैं मौलिक हू, कोई अनुवाद नही हू।
मैंने सीखा है अपने बल पर उठना।
है कौन जो मेरे पथ से मुझे हटादे।
मैं नही जानता क्या होता है झुकना।

बारूद बनाने वालो का दल-बल भी
मेरी निष्ठा से बड़ा नही हो सकता।
जो हिंसा से इतिहास बिगाड़ा करता।
वह मेरे सम्मुख खड़ा नही हो सकता।

मै महाउदय का ओज लिये चलता हू।
दुश्मन उनका जो पन्थ बीच रुकते है।
बिकने रहते है जो मिथ्या के हाथो।
जब-जब भी वे उठते है तो पिटते है।

अमरत्व नही मिल सकता हरगिज उनको।
इस पद के अधिकारी होते है त्यागी।
त्यागी को कब प्राणो की होती परवाह।
उसकी आँखे नित रहती जागी-जागी।

मैं हू विभ्राट जनो के पथ का पन्थी।
शोलो को शबनम बना के चलने वाला।
है कौन जो तुम मे मेरी व्यथा समझले!
मैं हू जग की तकदीर बदलने वाला।

मै प्रतिपल गाता हू वह राग सुहाना
सुनकर जिसको जीवन करवट लेता है
उद्दाम रश्मियो के घूघट उठते है
अगडाई जिससे हर पनघट लेता है

म लहरो सा तट से टकराता चलता।
झरनो सा नित मुस्काता-गाता चलता।
भूतल ज्यो नित अन्तर मे दद छुपाये
पद पद पर नित नव-दीप जलाता चलता।

गुरुता लघुता के भेद-भाव से हट कर
मैंने सीखा है प्रतिपल चलते जाना।
तूफान ववण्डर उठे सहस्रो लेकिन
अक्षय दीपक ज्यो सीखा जलते जाना।

मै प्रतिभापुञ्ज किरण-पथ का अनुगामी।
पाथेय प्यार का लेकर चलने वाला।
कोलाहलमय इस श्रम से भरे जगत मे
प्रतिपल गिर गिर हर वार सम्भलने वाला।

मै कालिन्दी का तीर, कृष्ण का गोकुल
भगवान राम का पावन घाम तपोवन।
मै बौद्धि-वृक्ष गौतम के अथ का साक्षी
मै पाञ्चजन्य की ध्वनि का प्रखर प्रयोजन।

मेरे 'मैं' मे ब्रह्माण्ड मुखर हो गाता
हर तत्व विश्व का अपनी सीख सुनाता
साधन भर बनती कलम काव्य की मेरी
उन्नत होता वह इसे समझ कुछ पाता

मेरा 'मैं' 'तू' की पीड़ा देख न सकता
इसलिये कर रहा बार बार आवाहन
आ! 'मैं' की वैतरणी मे मन को धोले
चिर निद्रा वश हो सो जायेगा दाहन

फैलाकर चलना सीखो सदा भुजाय!
अनुमोदन करो सुबह के सम्बोधन का!
म शखध्वनि करता तुम करो निराजन!
अर्चन हो श्रद्धा से भू के जन-जन का!

आंगन-आंगन तुम्हे पुकारे ।

आगन आगन तुम्हे पुकारे उठ ओ जीवन धाम रे।
हर आनन पर नाम तुम्हारा हो, ऐसे कर काम रे।
उठ ओ जीवन धाम रे।

नायक बन तू बनने वाले नये नये इतिहास का
आने वाला युग समझेगा फूल तुम्हे मधुमास का
जब तक जीवन जी बन कर तू निवल का बल राम रे।
उठ ओ जीवन धाम रे।

गले लगा पहले आगे आ, व्याकुल हर मजदूर को
राह दिखाना काम है तेरा जगके हर मजदूर का
ये दुनिया है एक अयोध्या, तू है इसका राम रे।
उठ ओ जीवनधाम र।

तुम्हे पुकारे लाख लाख ललनाओ का सिन्दूर रे।
अपना तन-मन वार के उनका दुखडा कर तू दूर रे।
बसा उजड़ती अभिलाषाओ के तू पावन ग्राम रे।
उठ ओ जीवन धाम रे।

नाम हमारा है दुनिया की जीत के पहरेदारो मे।

नाम हमारा है दुनिया की जीत के पहरेदारों मे।
हमको घायल कर दे बल है इतना किसके वारों मे?

चोरों-कमजोरों की बाते हमको मिटा न पायेगी
गीत हमारे सारी दुनिया की सन्तानें गायेगी
दर्जा पहला रहा हमारा साहस के हकदारो मे।
हमको घायल करदे बल है इतना किसके वारो मे?

प्रीत को मजिल हमने दी है, दुनिया भूल न पायेगी
भूल जो जायेगी दुनिया तो हरगिज सवर न पायेगी
पढलो अगर यकीन न हो तो लिखा यह चाद सितारो मे।
हमको घायल करदे बल है इतना किसके वारो मे?

सूरज हमने जगको सौंपा, हम किरणो के दाता हैं।
बल भी बल लेता हम से, हम बलके चिर निर्माता है।
भारत माता, जगकी माता, हम हैं उसके दुलारों मे।
हमको घायल करदे बल है इतना किसके वारो मे?

सपूत ।

तू उठ स्वदेश के सपूत होनहार बन ।
होनहार बन सबल, मनुज महान बन ।

न भूल जिन्दगी है यह स्वदेश के लिये
कदम बढ़ा—सबल, सतत स्वदेश के लिये
अनन्त काल तक चले तू वह निशान बन ।
होनहार बन सबल, मनुज महान बन ।

बना जो अपने हमसफर है उनकी टोलिया
सुना समस्त विश्व को विजय की बोलिया
तू अद्वितीय वीरता का नव विहान बन ।
होनहार बन सबल, मनुज महान बन ।

जो पेट भरके चल बसे वह आदमी नही
किसीका कुछ न कर सके वह आदमी नही
वे आदमी थे जो कि विश्व के लिये जिये
जिन्होने विश्व के लिये जहर के घट पिये
तू उन महान व्यक्तियों का नव प्रमाण बन
होनहार बन सबल, मनुज महान बन ।

जबतक मैं जिन्दा हूं जीऊंगा प्यार से।

जब तक मैं जिन्दा हू, जीऊँगा प्यार से।
क्योंकि मैं परिचित हू अपने अधिकार से।

दुनिया मे आधी भी है तूफान भी
क्रन्दन, रुदन भी है लेकिन मुस्कान भी
अनजानापन है लेकिन पहचान भी
है लाखों अभिशाप तो सौ वरदान भी
व्यापकता ने भरी विविधता से झोली
बचा हू फिर भी मैं उलझे उद्गार से।
क्योकि मै परिचित हू अपने अधिकार से।

द्वारे लाखा बार विवशता आई है
लेकिन उसने सदा विफलता पाई है
दृष्टिकोण की धरा न जिनकी अपनी है
उन्होने सौ-सौ बार विफलता पाई है
वैसे कुछ मेरा भी उनसे नाता है
किन्तु बचा हू म उनके प्रतिकार से।
क्योकि मैं परिचित हू, अपने अधिकार से।

जब-जब मन व्याकुल होता है

जब-जब मन व्याकुल होता है तब तब म कलम उठाता हू ।
विश्वास जगाकर जीने का, दो गीत मिलन के गाता हूँ ।

भोलेपन वश कुछ दुबलना
मन की मुस्कान चुरा लेती
असफलता पीछे से आकर
भ्रम का तूफान उठा देती
तब तब होकर कुछ खिसियाना, म द्वार अहम के जाता हू ।
जब जब मन व्याकुल होता है, तब तब म कलम उठाता हू ।

सुन अहम भरे मेरे नारे।
दुर्बलता थर्राने लगती
असफलता फिर न आने की
कसमें रो रो खाने लगती
तब-तब स्थिर होकर जग को मैं अपने उद्गार सुनाता हू ।
जब-जब मन व्याकुल होता है, तब-तब म कलम उठाता हू ।

आदश के आगन मे जन्मा
आदर्श को कैसे ठुकराऊ ?
कैसे यथाथ की कटुता मे
ये भोला मनले मुस्काऊ ?
वह सभ्यवाद यह नग्नवाद, म सभ्य रहा ही चाहता हू ।
जब-जब मन व्याकुल होता है तब तब मैं कलम उठाता हू ।

विश्वास नही जिसका खुद पर

विश्वास नही जिसका खुद पर इतिहास बना क्या पायेगा।
मन पर न जिसे काबू अपने मधुमास बुला क्या पायेगा।

अस्थिरता कभी सफलता के बीजो को पाल नही सकती
निष्ठुरता प्यार के साचे मे जीवन को ढाल नही सकती
बेताला राग किसीके भी मन को कब लगा सुहाना है।
कीमत उसकी कब हुई न जिसका होता एक ठिकाना है।
पहचान नही जिसकी जल से, वह प्यास बुझा क्या पायेगा।
विश्वास नही जिसका खुद पर इतिहास बना क्या पायेगा।

विश्वास का मौसम पाने पर आशा, उपवन मुस्काता है
विश्वास हिला जिसका, पतझड उसके जीवन मे आता है
पतझड ही नही पतझड़से भी नीचे बह गिरता जाता है
जो लुभा न पाया धरती को आकाश लुभा क्या पायेगा।
विश्वास नही जिसका खुद पर इतिहास बना क्या पायेगा।
मन पर न जिसे काबू अपने मधुमास बुला क्या पायेगा।

होली के रंगो से

होली के रगो से हृदय जो रग न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

कब ले सकोगे तुम यहां जीवन की मस्तिया
यू रौंदते चलोगे यदि जीवन की बस्तिया
देखोगे फूल, मूल पर अगार धरोगे
तो किस तरह खुशी से आँखे चार करोगे

मन तक जो बन बसन्त को बुला न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

बनती रहेगी यू ही उमङ्गों की जवानिया
बनती रहेगी रोज यो जलती कहानिया
कदमो को थिरकने का मजा आ न पायेगा
तुम देखते रहोगे फागुन लौट जायेगा

बेहाल फिर गुलाल तुम उडा न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

प्यालो मे दिलो के नया रग घोल उछालो
हर मित्र के गले मे हार जीत का डालो
सब कुछ समझ के भी न यू अनजान बनो तुम
शैतान मत बनो अरे! इन्सान बनो तुम

इस बात को दिल मे जो तुम बसा न पाओगे
तो क्या हँसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

होली मनाने के लिये प्रह्लाद चाहिये
मृदुनाद बस न बाद न विवाद चाहिये
पलते जो पाप मे यह उनका पर्व नही है
प्राणों मे जिनके पुण्य का कुछ गर्व नही है!

कण-कण को जमी के अगर हसा न पाओगे
तो क्या हँसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे!

आजाद देश है मगर आबाद क्यू नही
पाई है बासुरी तो उसमे नाद क्यू नही
है रग पास किन्तु उमगे मरी हुई
हर अङ्ग की बिन सग के आखे भरी हुई

बदरग तरगों से जग कर न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

हर कंदित खेंचये के हाथो डूबी जा रही
हर बस्ति वासिन्दों के हाथो लूटी जा रही
हर हंसमुखी राधा का सजन उससे दूर है
हर दिल दुखी यूं है कि उसका सजन दूर है

हर प्रान को सजन सदन दिला न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

हैरान हसरतो को उठो तुम गुलाल दो
नादान बेदर्दो को तुम नये खयाल दो
फेंको न जारा वह कि जिन्दगी तड़प उठे
हर जिन्दगी पे मौत का शोला भड़क उठे

हर हाथ को फागुन का फूल दे न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

मेरी धरती

मेरी धरती, मेरा सूरज मेरे चाद सितारे
इतना सब कुछ पाकर क्या मै भटकू द्वारे-द्वारे ।

हवा हाँकती है मेरा रथ मौसम पथ दिखलाता
आसमान अरमान सजाने उतर जमी पर आता
फूल महकते नाम ले मेरा प्रति दिन प्यारे प्यारे
इतना सब कुछ पाकर क्यो मैं भटकू द्वारे-द्वारे

उन्मादी बादल भी मेरी सेवा कर जाता है
सागर भी जब जी चाहता तब मोती दे जाता है
बिजली तक ने दासी बन नित मेरे काम सवारे
इतना सब कुछ पाकर क्यो मैं भटकू द्वारे-द्वारे

पर्वत ने भी दिल देकर मुझ का समृद्ध किया
तृण-तृण तक ने जुट मेरे आसन को सिद्ध किया
ककर-ककर ने शकर बन मेरे गान उचारे
इतना सब कुछ पाकर क्यो म भटकूँ द्वारे-द्वारे

समान गान

समान खान, पान हो
समान गान, ध्यान हो
समान आन बान हो

समान हो बसन समान लाभ का प्रमाण हो
समानता समानता की धुन युगों से लग रही
इस पर भी क्यों असमानता यहाँ वहा झलक रही
समानता के चाहको ! समानता के साधको !
समानता के वास्ते समान ही बखान हो
समान हो बसन समान लाभ का प्रमाण हो

समान खान पान हो
समान गान ध्यान हो
समान आन बान हो

महल मे बैठकर समानता की बात मत करो
अपने घर मे दिन, पराये घर मे रात मत करो
सामान सब को एक-सा मिले यही विधान हो
न धर्म हो अलग, अलग न वेद हो कुरान हो
समान हो बसन समान लाभ का प्रमाण हो

समान खान पान हो
समान गान ध्यान हो
समान आन बान हो

कविता सुहागिनी

दिवस की धूप हो या हो निशा की चांदनी
सबको दुलारती है ये कविता सुहागिनी

अमा हो या हो पूर्णिमा, सावन हो या तपन
सबको किया है इसने प्यार से सदा वरण
मुस्का उठी सानिध्य पाके इसका दामिनी
सबको दुलारती है ये कविता सुहागिनी

सुमन का शीश का इसीने स्थान दिया है
कांटों को इसीने जगत का ज्ञान दिया है
सवरा इसीसे राग तो सवरी है रागिनी
सबको दुलारती है ये कविता सुहागिनी

नयनो को जवानी मिली इसीके प्यार से
चरणों को रवानी मिली इसीके प्यार से
देती ये शक्ति सबको बन सुधा सुवासिनी
सबको दुलारती है ये कविता सुहागिनी

मै निराकरण

मैं निराकरण बनूगा मैं निराकरण
सासों को मेरी दे रहा आधार जागरण

मैं बध नही सकता किसी के मोह जाल मे
है सत्य क्या यह बात है मेरे खयाल मे
लिखना है मुझ को गीत वह दुनिया के भाल मे
जो गीत गूजता है सत्य के सवाल मे
कहूगा मैं न वह हो जिससे दूर आचरण
न कहना तुम भी वह न पास जिसके आचरण
मै निराकरण बनूगा, मैं निराकरण

मैं सन्तुलन के द्वार से तुझे पुकारता
तू सहरन की दृष्टि से मुझे निहारता
वरण के नाम पर हरण का छोड दे चलन
तुझे तुम्हारे प्राण का नयन पुकारता
न अब गिरा सकोगे सत पे भ्रमका आवरण
मैं भेदता रहूगा सब तुम्हारे आवरण
मं निराकरण बनूंगा, मैं निराकरण
सासों को मेरी दे रहा आधार जागरण

ढूढता फिरता कोई भगवान को
ढूढता फिरता कोई धनवान को
किन्तु मैं ईमान जिसके पास हो
ढूढता फिरता हू, उस इन्सान को

न कुछ भी राम काम आया
न कुछ घनश्याम काम आया
किया जो काम मैंने नित
वही बस काम, काम आया

साँस ने यह कहा काम कर काम कर
एक पल के लिये भी न आराम कर
आदमी तू बना काम के वास्ते
करके आराम खुद को न बदनाम कर

आवाज को आवाज देता जा
जिन्दगी को इक नया अन्दाज देता जा
मुस्कुराता झूमता गाता हुआ
हर मुसाफिर को सफर का साज़ देता जा

न तन अपना मुझे दो तुम
न धन अपना मुझे दो तुम
अगर कुछ दे सको तो
आज मन अपना मुझे दो तुम

मैं गाता हूं इसलिये कि तुम मुझे याद करो
अपनी दुनिया, अपनी चाहत आबाद करो
फरियाद के फन्दे से निकल कर साथी
तुम रहो आजाद, मुझे आजाद करो

किसी नजर मे अति उन्नत विज्ञानवान है
किसी नजर मे अति उन्नत सम्पत्तिवान है
बुद्धिमान गुणवान भी उन्नत होते है पर —
सब से उन्नत वह नर है जो धैर्यवान है

पापी नही है वे जो राज चलाते गोली
पापी है वे लोग जो ठगकर भरते झोली
दलबन्दी का जाल फेंक सत्ता हथियाते
वे पापी है बडे जलादो उनकी होली !

मत झुको स्वय, झुकने वालो के नाम मिटादो
मन मन जलने वालों के धन धाम मिटादो
वाणी पर प्रतिबन्ध लगाने वालों को तुम
सुबह नही तो इसी दिवस की शाम मिटादो

टूटे हुये दिलो की महफिल म आ गया
आया था मुस्कुरान पर तिलमिला गया
कुछ बात ही थी ऐसी रोना पडा मुझे
मैं नाम उसका क्यों लूँ जो मुझको रुला गया

दो पत्र

जब से तुम बम्बई गये हो
सूना-सूना लगता है घर
आस पास के लोगबाग
सब रूठ गये हैं।
जाने क्या है बात न कोई मिलता-जुलता
रधिया और राजू से
दिन बहला लेती हूं।
पर परसों से राजू भी बीमार हो गया
मनीआडर भी अबकी बार
मिला देरी से
दो दिन रधिया ने और मने
पानी पीया।
राजू को गुड से मूडी से भरा मिठाई
घर मे तेल बिना
कल जल नही पाया दीया।
चीनी चार दिनो से
घर मे नही ला सकी
नीबू का शरबत रधिया यों नही पी सकी
दो महिनो की फीस
नही हम दे पाये है
अब स्कूल को राजू अब नही जा पाता है।
ज्येष्ठ मास की कड़की मे
राजू था घूमा
फस्त कै और दस्त साथ ही साथ हो गये।
वैद्य दवा दे चुका
किन्तु कुछ लाभ नही है।

कल से और अधिक
तबियत का बुरा रवैया
आज सेन बाबू को दिखलाने लाई थी
छ रुपये इन्जक्सन मे ही खर्चे हो गये
मिक्स्चर और फीस का अब तक बाकी खर्चा
अग्रिम सप्ताह तक मनीआर्डर नही मिला तो
बेवश होकर मुझको करना होगा कर्जा
कर्जे की है बात बुरी
मुश्किल से मिलता
पहले के कर्जे से दम मेरा है घुटता
ब्याज ब्याज में श्रम का पैसा बह जाता है।
बडी बुरी हालत है
दुखडा किसे सुनाऊ
ऐसे मे तुम भी तो मुझ से दूर हो गये।
अजगर सी यह रात भयानक मुह बाये है
और एक दिन खा जायेगी
रक्तहीन हिलते डुलते मेरे पुतले को
गम केवल इतना है
रधिया राजू छोटे
वर्ना मेरी लाश जमी के नीचे होती।
अधिक तुम्हें क्या लिखू
राम तुम से भी रूठा
वर्ना हिम्मत के तुम भी पूरे,
कमजोर नही हो
बुरा भला लिख डाला
हो तो ध्यान न करना
खत लिखना
खत लिखने मे मत देरी करना

खत मिला

खत मिला
पढ़ लिया
दिल को कुछ चैन नही
घर की हालत को देख
सोता दिन रैन नही
कल्लू ने आके कहा
तुम्ह भी पुकार है
साहस से काम लो
अब न अधिक देर है।
अचिर मे होने वाला
उजला सवेर है
शहरों से नफरत
आज मुझे होने लगी,
शहरो मे आदमियत
देखता हू रोने लगी
आदमी मशीन का पुर्जा बना हुआ
घूमता यहा वहाँ
अचेतन बना हुआ।
बी० ए० की डिग्री का
मूल्य है यहा नही
आदमी को आदमी से
प्यार है यहा नही।
ईमान लुट रहा यहाँ
असत्यता निखर रही
कि रोम-रोम जल रहा
हृदय मे आग जल रही।
सिसक सिसक मनुष्यता

बिगड रही, उजड रही।
नौकरी की खोज मे यहा
घूमता हू सात दिन हुए
भटक रहा हू रात दिन
खामोश भावना लिये।

बहकाके कोई ले गया था
मुझे फिल्मो मे देने काम
काम कर चुका अच्छी तरह
किन्तु मिले नही अभी तक दाम।

सरकारी व्यापारी
सभी आफिसो मे गया
किसी ने न मुह खोल कर
बात की जबान से
सट्टे का काम यहा
चलता है जोरों से
'छक्के से पञ्जा' लगाया था
रात को
मै न जानता था, है—
'ओपन टू क्लोज' क्या
होटल के बहरे ने
बनाया था सोच के
भोर हुई कुछ न मिला
रुपया भी चल दिया
चवन्नी पास है
दुअन्नी खत्म हो गई
लिफाफे के वास्ते
दुअन्नी बाकी है
आधे दिन रात के वास्ते।

पिछले दिनों जासूसी
उपन्यास कुछ बेचे थे
फकत मनीआर्डर भी तुम्हे
पचास का भेजा था
आज-कल लिटरेचर बेचता हू
रवीन्द्र का प्रसाद का
पन्त, निराला, प्रेमचन्द का
राहुल का, यशपाल का
अश्क का, कृष्णचन्द्र का, अब्बास का
सुमन, शील, नागार्जुन का
बडे दुख की बात है आजकल
किताबे कोई नही पढता है
राहुल की किताबे बिकती है बडी मुश्किल से
बडे लोग खरीदते है
यशपाल व कृष्णचन्द्र की किताबे क्लर्क
स्टूडेन्ट कुछ लेते है।
लेते है किताब आज
पढ लेते पूर्ण उसे
मूल्य किन्तु हफ्ते दो हफ्ते बाद देते है।
इसी तरह हिन्दी की उत्कृष्ट पत्रिकाओ का भी रवैया है
घर घर मे माग है, आज कल फिल्मी पत्रो की
परसों तक इधर उधर से
कुछ पैसा इकट्ठा कर पाऊंगा
छ दिन हुए मैं भी पेट भर
खाना नही खा सका हू।
ये दिन हमेशा नही रहने के पद्मा,
खार मे स्टेशन के पास एक झोपडा बनाया है।

पचास रुपये किसी तरह
इकट्ठे हो पायेंगे
पचास रुपये की मदद देने का वादा
एक मित्र ने किया है
पाते ही मनीआर्डर रवाना हो जाना बम्बई को
तुम सब की जुदाई मे कभी दिल फटने लगता है
सोचता हू, कभी हार्टफेल ही हो जायगा।

जितने दिन जीना है
साथ रह के जीयेंगे
हमे दर्द बेवशी की दीवार तोड
जिन्दगी की अन्तिम सास तक नया अफसाना बनाना है।
जो कुछ लिखा है खत मे
सोचना समझना जरा
बहकना नही
छलकना नही
जानता हू
आजतक मैं तुम्हे चैन नही दे सका
आँसुओं को पीके तुम जिन्दगी काटती हो।
इसमे भी कुछ भाव है
तत्व है, सार है।
सोचता हू मै
समझता हू मै
तुम आज की नही,
आनेवाली पीढी के राह की गहरी
विषभरी
खाइयो को पाटती हो।
बहुत कुछ लिख गया

बहुत कुछ बक गया,
राजू की मा हो तुम
राजू को पालना
भूलना नही
भटकना नही
गिला है कुछ जमाने से
तो राजू को सवारना।
सब को दुलार देना
बच्चो को प्यार देना
लौटती डाक से—
तुरत भूलना मत
खत देना।

[ता० ८ अगस्त १९५४ को ये दो पत्र बम्बई के विचित्र उपनगर खार रोड की एक सड़क पर मिले थे।

——

प्यासे मन

प्यासे पनघट ढूंढ रहा अन्यत्र कहा
तेरे प्राणों का पनघट तेरे आस-पास
तेरी रग रग मे लहराता है वह सागर
बुझ सकती जिससे भव भर की उद्दाम प्यास

तेरी परिचर्या हित ही सूर्य उदय होता
नक्षत्र, चन्द्र सारे नभ मे मुस्काते हैं
शायद तुझको यह ज्ञात नही होगा, पच्छी
तेरे स्वर को ही बार बार दोहराते हैं।।
देखो मधुऋतु का हमजोली कह रहा पवन प्रतिपल प्रतिक्षण
पहचान तू अपना बल इस क्षण अनुचित है होना यू उदास
प्यासे मन पनघट ढूढ रहा अन्यत्र कहाँ—
तेरे प्राणों का पनघट तेरे आस-पास

तेरा पद तल पा भूमि-भूमि कहलाती है
तेरा शुभ स्वर पा गगन-गगन कहलाता है
आश्चय न हो कैसे कवि को वह दृश्य देख
जब तू पानी-पानी-पानी चिल्लाता है
यह मज्ञा शून्य दशा तेरी कही मृत्यु न बन जाये मेरी
मुस्काओ क्षण भर मुस्काओ आह्वान कर रहा है विकास
प्यासे मन पनघट ढूढ रहा अन्यत्र कहाँ
तेरे प्राणों का पनघट तेरे आस पास

